OM-2- 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 25/03/2021 6:17 PM Page 1

ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -23 | अंक - 02 | अप्रैल -II-2021 | (पाक्षिक) | माउण्ट आबू | Rs. 8.50

परमात्म संदेशवाहक का अव्यक्तारोण

“ कुछ भी हो जाये, खुशी न जाये... का पर्याय बनकर, सभी के हृदय में उतरकर, सर्व सुखकारी, निर्संकल्पी, गम्भीर मुद्रा के साथ सबके मन को मोहने वाली दादी हृदयमोहिनी, उस चर्मोत्कर्ष पर चढ़ीं कि परमात्मा को शिरोधार्य कर सबको उनके सम्मुख लाया। सुखदेव बन सर्व सुखकारी बनाया। दिलाराम परमात्मा की दिलरुबा, दशकों से लाखों आत्माओं को परमात्म-मिलन कराने वाली, उनके महावाक्यों को हुबहु सबके सामने रखने वाली, ऐसी निर्संकल्प आत्मा को सम्पूर्ण विश्व सहित सभी ब्रह्मावत्सों का दिल की गहराइयों से नवीन समाज के नवाचार हेतु अव्यक्तारोहण की शत्-शत् स्मरणांजलि। ”

सन् 1936-37 से प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के साकार माध्यम पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा बाबा परमात्म अवतरण के निमित्त बने। ये कार्य लगभग तैंतीस वर्षों तक चला, 18 जनवरी 1969 में पिताश्री ब्रह्मा बाबा अव्यक्त हुए अर्थात् इस साकार देह को छोड़ अपना एक लाइट का शरीर(फरिश्ता स्वरूप) धारण किया। परमात्मा के आने की गतिविधि में बाधा न हो, इसके लिए शास्त्रगत गायन के अनुसार परमात्मा के अवतरण के दो माध्यम दिखाये जाते हैं। एक, जो शिव की सवारी नंदी के रूप में है और वहीं दूसरा (शिवलिंग की दूसरी तरफ) छोटी नंदी बैठा होता है। दुनिया में शिव की सवारी बैल दिखाते हैं, लेकिन बैल पर परमात्मा कैसे बैठेगा! तो इसे साकार रूप से समझने का अवसर ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान देता है। परमात्मा किसी साकार माध्यम को अपना रथ चुनता है और उसके द्वारा ही परमात्मा का संदेश चारों तरफ जाता है। ब्रह्माकुमारीज़ के साकार माध्यम प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के अव्यक्त होने के पश्चात् परमात्मा ने दादी हृदयमोहिनी(दादी गुल्ज़ार) को अपना रथ बनाया। नित्य परमात्मा के महावाक्य जो हम यहाँ सुनते हैं वो साकार माध्यम के द्वारा उच्चारण किये गये महावाक्य हैं, जिसे मुरली कहते हैं। जो पुरुषार्थ की गहराई और आने वाले नये बच्चों के लिए पालना का आधार बना। शिव बाबा ने ईश्वरीय कार्य को और आगे बढ़ाने तथा आने वाले नये जिज्ञासुओं के लिए दादी हृदयमोहिनी को अपना द्वितीय रथ चुना। आज 1969-2021 तक 51 साल पूरे हो गये। अब 11 मार्च 2021, महाशिवरात्रि के महान पर्व पर दादी ने अपने पंच तत्वों के देह का त्याग किया। 1928 में सिंध,कराची में जन्मी दादी हृदयमोहिनी ने मात्र 9 वर्ष की अल्पायु में इस ज्ञान को अपनाया और साकार माध्यम प्रजापिता ब्रह्मा के सानिध्य में बहुत समय तक शिक्षा एवं पालना लेते रहे। जब 1951-52 में यज्ञ सेवा की शुरुआत हुई तो दादी हृदयमोहिनी दिल्ली में ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र के स्थापना के निमित्त बनीं। दिल्ली के पाण्डव भवन,करोल बाग सेवाकेन्द्र पर रह कर दादी काफी समय तक दिल्ली के मुख्य संचालिका के रूप में कार्यरत रहीं। दादी के शब्द हमेशा नपे-तुले होते। कम शब्दों में बड़ी-बड़ी बातें कह जातीं। उनके बोल में एक अथॉरिटी थी, थोड़े शब्दों में ही गुह्य रहस्यों को स्पष्ट कर देती थीं। उनका समय निरंतर परमात्मा की याद में बीतता, ऐसा हमेशा प्रतीत होता था। समय की अति पाबंद दादी सबको अपनी बातों से मंत्रमुग्ध कर देती थीं।

दादी परमपिता परमात्मा शिव बाबा की ट्रान्स मैसेंजर भी थीं और इसी श्रेष्ठ कर्त्तव्य के निमित्त ब्रह्माकुमारी संस्थान की गतिविधियों का क्रियान्वयन होता रहा। समय प्रति समय बदलते हुए परिवेश में भी दादी का रथ निरंतर परमात्म-मिलन के कार्यक्रम को कराता रहा। सारे ब्रह्मावत्स परमात्म वरदानों से वंचित न रह जायें, उसके लिए दादी बीमारी में भी सोचतीं कि मैं थोड़ी देर के लिए तो बैठ जाऊँ। जिससे कुछ पल के लिए सही लेकिन सभी का परमात्म मिलन भी हो और पालना भी मिले।

परमात्मा के हृदय को मोहने वाली दादी हृदयमोहिनी का हृदय इतना शुद्ध और पवित्र था कि जो परमात्मा के दिये गये निर्देशों को हुबहु इस यज्ञ में बताती थीं जिससे ब्रह्माकुमारी संस्थान के सर्व सेवाओं के प्लान सुचारु रूप से चलते गये और ये कार्य आगे बढ़ता गया। वे परमात्मा की शांतिदूत बनकर विश्व में शांति स्थापित करने का कार्य अथक और अविरत करती रहीं। आज पूरा विश्व दादी हृदयमोहिनी की अमूल्य सेवाओं को शिरोधार्य कर शत् शत् नमन कर रहा है। दादी ने परमात्मा के कार्य को विश्व पटल पर लाने के लिए कई देशों में भ्रमण भी किया, किंतु वे ज़्यादा भारत में ही रहीं। उनका जो ज्ञान देने का तरीका था वह सटीक एवं सहृदयी होता था जो सभी के हृदय को स्पर्श कर जाता था। जो एक बार दादी के सानिध्य में आया वो ज़िन्दगी में कभी उन्हें भूल नहीं पाया। ऐसी हृदय को छू लेने वाली दादी हृदयमोहिनी को हृदय से नमन।

Reverend Dadi Hirdaya Mohini Ji

(Chief of Brahma Kumaris)

OM-2- 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 25/03/2021 6:18 PM Page 2

हृदय के सम्राट को हृदय से नमन...!!

ब्र.कु. गंगाधर

जब संसार एक ऐसे दौर से गुज़र रहा था, जहाँ हर मनुष्य के मन में एक संकल्प उठता कि कुछ परिवर्तन होना चाहिए। पर कैसा परिवर्तन, किस तरह से आयेगा, ये एक सवाल हरेक के ज़हन में सवाल बनकर ही रह जाता। विश्व में चारों ओर हाहाकार, अत्याचार और प्रकृति के तांडव के मध्य कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि ऐसे में कौन हमें इससे पार पहुंचायेगा!

फिर ऐसे में एक दिव्य-अलौकिक शक्ति का आगमन इस धरा पर होता है। आरंभ में तो कोई उसे पहचान नहीं सका, पर जिन्होंने पहचाना, वे उन्हीं की राह पर चल पड़े। हम अनुभव के आधार से बताना चाहते हैं कि वो शक्ति थी 'परमपिता परमात्मा शिव'। उन्होंने आकर अपने वत्सों को विश्व परिवर्तन के कार्य के लिए तैयार किया जिसमें नारी शक्ति को आगे रखा। जिसका एक संगठन बनाया, उसी का नाम रखा प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय। उन्हें सृष्टि-चक्र के ज्ञान से सुसज्जित किया। कैसे हमारा भारत पुनः सोने की चिड़िया बनेगा यह स्पष्ट किया। इस संगठन में परमात्मा को पहचानने और उनके निर्देशन में चलने वालों में से एक हम सबकी स्नेही दादी हृदयमोहिनी रहीं। दादी हृदयमोहिनी ने लौकिक पढ़ाई तो बहुत नहीं की थी किंतु हृदय की भाषा समझने में उन्हें महारत हासिल थी। वे व्यक्ति के हृदय को तो जान ही लेतीं किंतु उससे भी परे परमात्म-हृदय को भी अपने सरल, साफ, स्पष्ट और शुद्ध हृदय से मोह लिया था। पूर्व मुख्य प्रशासिका दादी जानकी के अव्यक्तारोहण के पश्चात् वें 2020 में इस विश्वव्यापी संगठन की मुखिया बनीं और ईश्वरीय सेवाओं के कारोबार को और तीव्रगति से आगे बढ़ाया।

दादी हृदयमोहिनी को परमात्मा में सम्पूर्ण निश्चय था। वे पूर्णतः जानती थीं कि ये परमात्मा का कार्य है और ये होकर ही रहेगा। इसीलिए वे निश्चिंत भी रहती थीं। यहाँ निश्चिंत रहना माना कर्म से भागना नहीं है। किंतु उसको और ही कुशलता पूर्वक करते हुए उसके बीच में आने वाली प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष बाधाओं से बिना विचलित हुए करना। मुम्बई के हॉस्पिटल में स्वास्थ्य लाभ लेते हुए भी दादी जी संगठन में आने वाली एक बहुत बड़ी विघ्न को जाना, समझा और निवारण के लिए निर्देश दिये। दादी जी को दिव्य दृष्टि का वरदान प्राप्त था। हमारा ये दादी जी के साथ का अनुभव है कि दादी जितनी गम्भीर थीं उतनी ही रमणीक भी। दादी से यज्ञ कारोबार के सम्बंध में जब भी मिलना होता, दादी बहुत ही कम शब्दों में स्पष्ट और सटीक उत्तर देकर हमें हल्का कर निश्चिंत कर देतीं। जब हम ज्ञानसरोवर के कारोबार को देख रहे थे तो दादी जी वहाँ आती थीं और सबमें उमंग-उत्साह भर हल्का कर देती थीं। दादी जी का सानिध्य पाना, ये हर कोई के लिए एक लॉटरी से कम नहीं होता था। दादी की दिव्यता और रूहानियत की कशिश सबके दिलों को छू लेती थी। जो कोई उनसे मिलता, वो उन्हें भुला नहीं पाता। दादी जी कम सोचतीं परंतु श्रेष्ठ व शुभ चिंतन में खोई रहतीं। उनकी बुद्धि परमात्मा पर केन्द्रित थी। दादी का परमात्मा के साथ एकाकार रहने और उनके पावरफुल वायब्रेशन के कारण जो भी उनसे मिलने जाता वो सुकून महसूस करता। वो अपने आप को हल्का व तरोताज़ा अनुभव करता।

अपने भाग्य के गीत गाते खुशी में झूमते रहें

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

हम सभी एक-दूसरे को देख खुश होते हैं क्यों? क्योंकि हमको बाबा ने सारे विश्व में से चाहे इंडिया हो या कोई भी स्थान, सब जगह से चुनकर सिकीलधा बनाया है। कितना सुन्दर हॉल बनाकर दिया है, जिसमें मेरे बच्चे बैठे हैं। उन्हें ज़रा भी दुःख न हो,इतना ख्याल रखता है बाबा बच्चों का। बाबा को सभी बच्चों से विशेष प्यार है। बाबा का बच्चों की एक-एक चीज़ पर अटेन्शन जाता है। हमने साकार बाबा को देखा, बच्चों की खुशी के लिए अपनी जान देने को भी तैयार रहता था, बस मेरे बच्चों को दुःख न हो। हम सभी भी बाबा के प्यार के हकदार हैं। जितना बाबा का प्यार स्वीकार करते रहेंगे उतना ही अपने को भाग्यवान समझेंगे। अगर कोई बीमार भी होता था तो बाबा कहता था बच्चे की बीमारी मुझे लग जाये, बच्चे को नहीं। क्या हमें भी बाबा से इतना प्यार है? प्यार में तो क्या नहीं कुर्बान किया जा सकता! स्थूल वस्तु नहीं, सूक्ष्म संस्कारों को बाबा पर कुर्बान करना, क्या बड़ी बात है! बाबा हमारा कितना ध्यान रखते हैं, यह देख बहुत खुशी होती है। दिल से निकलता है वाह बाबा वाह!

बाबा ने बच्चों के लिए कितने सुख के साधन बनाये हैं। हम जब यहाँ आते हैं तो आपका जीवन देख हमें भी हमारा बचपन याद आ जाता है। बाबा ने हमें भी बहुत सुख के साधन दिये थे। फिर सेवा में लग गये, सेवा में तो अपने-अपने ढंग के स्थान होते हैं लेकिन जब तक साकार बाबा के साथ थे तो बहुत सुख के साधन मिले, जैसे अभी आपको मिले हैं। आपके भाग्य को देख खुशी होती है - वाह मेरे भाई-बहनें वाह! बाबा ने प्यार से आपके लिए यह स्थान बनवाया है। भल दूसरों के सहयोग से बना है,लेकिन बनवाने वाला कौन? बाबा। कदम-कदम पर वाह बाबा वाह! का अनुभव करते रहो। यहाँ संगठन में हर प्रकार के साधन होना कम बात नहीं। आपको जो यहाँ साधनों के साथ ज्ञान और योग की पालना मिल रही है, उसको स्मृति में रख खुशी में झूमना चाहिए।

संगठन में एक-दो के गुण देख उमंग-उत्साह से आगे बढ़ते जाओ, बातों में नहीं जाओ। संगठन का भी फायदा उठाओ। जो अन्तर का सुख यहाँ है, वह सतयुग में भी नहीं होगा। बाहर कुछ भी होता रहे लेकिन बाबा हमें हर हाल में खुश रखता है। ऐसा बाबा फिर कल्प के बाद ही मिलेगा। बाबा ने हमें सैलवेशन के साथ जो दिल की खुशी दी है वह कहीं भी मिल नहीं सकती। आपकी जीवन साधारण नहीं, भले भाव-स्वभाव का टकराव तो संगठन में होता ही है लेकिन बाबा का प्यार सब भुला देता है। ज्ञान ताकत देता है। सदा दिल से यही निकलता रहे वाह मेरा बाबा वाह! दुनिया में क्या लगा पड़ा है और बाबा ने हमारा भाग्य कितना श्रेष्ठ बना दिया। खुशी होती है ना? यहाँ खुशी के बिना और है ही क्या? अगर थोड़ा बहुत कुछ होता भी है, वह हिसाब-किताब संगठन में चुक्तू हो रहा है। बाबा हमें रोज़ खुशी का खज़ाना देता है,कमाल है बाबा की। धार्मिक स्थानों पर दूसरी बात होती है लेकिन यहाँ परिवार और स्कूल दोनों हैं। जब क्लास में होते तो स्कूल लगता और जब एक साथ खाते-पीते हैं तो घर लगता है। यहाँ दोनों भासना आती है। हमें सदा खुशनुमः रहना है, बातों से डरना नहीं है।

एक बाबा को ढाल बनाओ तो पुराने सब संस्कार परिवर्तन हो जायेंगे

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

बाबा की मुरली में तो सब सुनते हैं लेकिन यह मुरली मेरे लिए है, यह दवाई का डोज़ बाबा ने मेरे लिए दिया है, वह तीर के समान समझ लें, ऐसा बहुत कम समझते हैं। इसलिए मुरली पर सबका अटेन्शन एक जैसा नहीं रहता। यह गोली जो शूट हुई यह मुझे ही मारने वाली है, ऐसा कोई मुश्किल ही समझते हैं, अपने प्रति पावरफुल घाव कोई नहीं समझता। बाबा हमारे ऊपर इतनी भिन्न-भिन्न युक्तियों का बाण रोज़ क्यों मारता? क्या यह मुरली शास्त्र की तरह पढ़ने या सुनने तक है? क्या बाबा हमें बहलाने के लिए यह सब टोटके सुनाकर जाते, या यह एक-एक मुरली हमारे प्रति है? यह एक-एक लाखों रुपये का रत्न बाबा मेरे लिए खर्च कर रहा है, क्या मैं एक-एक रत्न की इतनी कीमत देती हूँ? यह जो धारणा की मुरली हम सुन रहे हैं, इतना बाबा हमें डीप ते डीप गुह्य बाण लगाता, फिर भी हमारे दिमाग में क्यों नही बैठती। पुराने संस्कार मिटते क्यों नहीं? बाबा ने कहा बापदादा से भेंट करो और कमियों की भेंट चढाओ तो क्या मैं बाबा से कदम-कदम पर भेंट करती या आत्माओं के पीछे सारा दिन हमारी दृष्टि घूमती? यह ऐसा क्यों बोलता, यह ऐसा क्यों करता... बाबा से पल-पल भेंट करनी है, जैसे बाबा हमारा सम्पूर्ण बना तो हमें भी सम्पूर्ण बनना है - आत्माओं से हमारी भेंट क्यों होती? अगर बाबा से भेंट करते रहो तो यह सब भेंट खत्म हो जायेंगी।

बुद्धि को बिजी रखो यदि हमारी बीजरूप पावरफुल स्थिति बनती जाये तो यह सब पुराने संस्कार खत्म हो जायेंगे। बुद्धि को निरन्तर मनन-चिन्तन में बिजी नहीं करते इसलिए बुद्धि नीचे की बातें रमण करना शुरू करती। जैसे बाढ़ आती तो बांध दिया जाता है या उसको दूसरी तरफ मोड़ दिया जाता, तो हमारी बुद्धि में संकल्पों की बाढ़ ही क्यों आवे? जो इधर-उधर भटके। बुद्धि ओवरफ्लो क्यों होती? हमको बाबा ने जो ज्ञान दिया है वह आधार ही है सम्पूर्ण बनने का। हमारी बुद्धि निर्मल गंगा के पानी की तरह चलती रहे, ओवरफ्लो नहीं होनी चाहिए।

यह संगम का समय बहुत ही कीमती है, यही घड़ियां संस्कारों को परिवर्तन करने की मिली हैं, फिर अगर हम कहें क्या करूँ - यह संस्कार मिटता ही नहीं, क्या यह कहना शोभा देता? बाबा को ढाल बनाओ तो सब संस्कार मिट जायेंगे, जो अपने कड़े संस्कारों को बदल सकता वही दूसरों के भी बदल सकता, मायाजीत वाले ही तो दूसरों को भी मायाजीत बनने का साधन दे सकेंगे। बाबा भी इस पुरानी दुनिया में था, उसने भी अपनी सारी जीवन इस दुनिया में बिताई लेकिन क्या बाबा के मुख से कभी किसी ने सुना - क्या करूँ यह मेरा भी पुराना संस्कार मिटता नहीं। किसी ने बाबा की चलन से, बाबा के व्यवहार से कब ऐसा देखा? जब साकार हमारे सामने सैम्पुल था, उसने कभी नहीं कहा तो फिर हमारे मुख से यह शब्द क्यों निकलते? मैं बाबा का हूँ, मुझे बाबा समान बनना है यह है तीव्र पुरुषार्थ। ऐसा लक्ष्य रखो तो परिवर्तन करना मुश्किल नहीं। अगर वर्णन करते मैं क्या करूँ तो यह भी कमी है। दूसरे का संस्कार तो फौरन नोट हो जाता, अपना नहीं,क्यों? स्वर्ग में तो परिवर्तन नहीं होना है, जब करना ही यहाँ है तो ढीलापन क्यों रहता? सदैव अटेन्शन रहे कि मेरे रजिस्टर में कोई भी नुक्स का मार्क्स नहीं होना चाहिए।

पूर्वज की स्मृति सदा रहे तो चेहरे पर साधारणता आ नहीं सकती

राजयोगिनी दादी जानकी जी

आज तीन बारी ओम शान्ति का भिन्न विचार आ रहा है, विचार माना अनुभव हो रहा है। एक सेकण्ड में त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी, तीनों लोकों के मालिक यह भान आता है। जैसे बाबा ने कहा जब कोई नॉलेज पढ़ते हैं, तो समझते हैं फलाना बनूँगा और हम अभी अनुभव कर रहे हैं, पढ़ते-पढ़ते याद में बैठे हैं, कुछ काम तो कर रहे हैं ना! याद में क्या है? त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी यह भान देह के भान से स्वतः ही परे कर देता है। मेहनत नहीं करनी पड़ती। संगमयुग पर बाबा मिला सबकुछ मिला, कोई इच्छा नहीं, ममता नहीं। बाबा से जो मिला है वह स्वप्न में, संकल्प में है सबको मिले, यह भावना काम कर रही है। वृत्ति, वायब्रेशन और वायुमण्डल से बहुत अच्छी सेवा हो रही है। सहज योग, सहज सेवा और इतना बड़ा परिवार है तो स्नेह और सकाश भी काम कर रहा है।

ईश्वरीय अलौकिक परिवार में हम खुश, आप खुश, बाबा भी खुश। बाबा ने कहा वाह बच्चे वाह! तो हम सब मिल करके वाह बाबा वाह! कहेंगे। भगवान के बच्चे हैं। भगवान मेरा साथी है, सेवा मेरा भाग्य है, सिम्पल है। ज्ञान बहुत सहज, सिम्पल, अच्छा, रमणीक है। कभी हँसने-बहलने के लिए रमणीक बातें भी चाहिए। वैसे अन्दर इसी मनन-चिंतन में रहते.. समय को सफल कर रहे हैं। सतयुग में हम कैसे होंगे, वह कोई बड़ी बात नहीं है, अभी कैसे है? फिर लगता है बाबा कहते हैं हम भगवान के बच्चे हैं, पर विश्व की सर्व आत्माओं के लिए हम पूर्वज हैं। पूर्वज कुछ भी बोलते नहीं हैं। पूर्वजों के चेहरे में साधारणता नहीं होती है। पूर्वज की स्थिति बनाके रखना किसका काम है? हमारा ना! ऊंचे ते ऊंचे बाबा हैं, बाबा ने क्या से क्या बनाया है। वो दिन और आज के दिन बाबा की बहुत सेवायें हुई हैं। बाकी ये सेवा दुनिया में हरेक आत्मा को पता चले, मेरा बाबा कौन है? परमेश्वर, वो मुझे अपना बच्चा समझे, मैं उसको अपना बाप समझूं। न सिर्फ बाप, पर पाँचों सम्बन्धों की शक्ति अलग-अलग है माँ, बाप, शिक्षक, सखा, सतगुरु। हरेक सम्बन्ध में अपनी शक्ति है। एक भी सम्बन्ध मिस नहीं है, मिक्स है तो समथिंग मिसिंग होगा।

पदमापदम भाग्यशाली वह है जो बाप को फॉलो करे और हम सब मिल करके फादर को फॉलो कर रहे हैं। जैसे बाबा कहते हैं - जी बाबा कहने में बहुत मजा है। बाबा के हरेक शब्दों का अर्थ सहित फायदा लेने में मजा आता है। बाबा कहते कोई बात समझ में नहीं आती है तो बाबा से पूछो, नहीं तो महारथियों से पूछो। तो मेरे कमरे में पूर्वजों का फोटो रखा है, घड़ी-घड़ी देखती हूँ हरेक ने जी बाबा, मेरा बाबा कहा है, जैसा बाबा ने कहा वैसा ही किया है। सभी पूर्वज आज्ञाकारी, वफादार, ईमानदार रहे हैं। अन्दर से उनकी शक्ति काम कर रही है। उन्होंने परमात्मा से जो शक्ति पाई है, जिससे अपना भविष्य बनाया है, वह सेवा अब भी कर रहे हैं, तब तो इतनी वृद्धि हो रही है। हमारा झाड़ बहुत बढ़ता जा रहा है। इस झाड़ में हरेक पत्ता भी शोभनिक है। साकार बाबा से यह स्पष्ट अनुभव होता था, साकार में निराकार, तो साकार बाबा शरीर में होते हुए भी निराकारी, निरहंकारी बना है निर्विकारी बनने से। जब तक निर्विकारी नहीं बनें तब तक निराकारी स्थिति बन नहीं सकती। तो हरेक देखें एक सेकण्ड कि निराकारी, निरहंकारी, निर्विकारी कहाँ तक बने हैं? यह रहस्य युक्त बड़ा अच्छा अतीन्द्रिय सुख तो क्या, फरिश्ता रूप की स्थिति में अनुभव कराता है। तो अनुभवी ही जाने इस सुख को।

पंचतत्व में विलीन राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी का पार्थिव शरीर

हज़ारों भाई-बहनों ने शामिल होकर दी अंतिम विदाई...

- ब्रह्माकुमारीज़ के अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय शांतिवन में किया अंतिम संस्कार
- राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने दुःख जताते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की
- विश्व के कई देशों से भी पहुंचे भाई-बहन
- 11 मार्च को सुबह 10.30 बजे मुम्बई के सैफी हॉस्पिटल में ली थी अंतिम श्वास

शांतिवन-आबूरोड(राज.)। राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी का पार्थिव शरीर 13 मार्च 2021 को पंचतत्व में विलीन हो गया। अंतिम संस्कार सुबह 10 बजे ब्रह्माकुमारी संस्थान के अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय आबूरोड,शांतिवन में किया गया। अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी ने उन्हें मुखाग्नि दी। बता दें कि दादी हृदयमोहिनी ने 11 मार्च की सुबह 10.30 बजे मुम्बई के सैफी हॉस्पिटल में अंतिम श्वास ली थी। इसके बाद उनके पार्थिव शरीर को एयर एंबुलेंस से शांतिवन में लाया गया, उसके पश्चात् कॉन्फ्रेन्स हॉल में देश-विदेश से आने वाले लोगों के अंतिम दर्शनार्थ के लिए रखा गया था। हज़ारों की संख्या में मौजूद ब्र.कु. भाई-बहनों ने अपने श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए दादी जी की शिक्षाओं को जीवन में उतारने, उनके बताए कदमों पर चलने और उनके समान योग-साधना कर खुद को परिपक्व बनाने का संकल्प लिया।

जहाँ से 13 मार्च सुबह 9 बजे अंतिम यात्रा निकाली गई। इस दौरान ऊँ ध्वनि करते हुए हज़ारों भाई-बहनें पीछे चल रहे थे। इस मौके पर संस्थान के अतिरिक्त महासचिव ब्र.कु. बृजमोहन, प्रबंधिका ब्र.कु. मुन्नी दीदी, सूचना निदेशक ब्र.कु. करुणा भाई, यूरोपीय देशों में ब्रह्माकुमारीज़ की निदेशिका ब्र.कु. जयंती, मुम्बई गामदेवी की ब्र.कु. निहा, ग्लोबल हॉस्पिटल के डायरेक्टर ब्र.कु. डॉ. प्रताप मिड्ढा, ब्र.कु. डॉ. बनारसी लाल शाह तथा अन्य वरिष्ठ भाई-बहनों ने भी दादी के साथ के अपने अनुभव बताते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की। अंतिम संस्कार के बाद दादी जी की याद में परमपिता शिव परमात्मा को भोग स्वीकार कराया गया।

140 देशों में जारी है योग-साधना

दादीजी के देहावसान के बाद से ब्रह्माकुमारी संस्थान के देश-विदेश में स्थित सेवाकेन्द्रों पर अखंड योग-साधना का दौर जारी है। सभी योग के माध्यम से दादीजी को अपने शुभ वायब्रेशन्स और श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे हैं।

दो दिन-रात जारी रहा अखंड योग

मुम्बई में दादी जी के देहावसान की सूचना के बाद से ही शांतिवन में योग-साधना शुरु हो गई। कॉन्फ्रेन्स हॉल में 11मार्च शाम को दादीजी के पार्थिव देह को अंतिम दर्शन के लिए रखा गया था जहाँ ब्र.कु. भाई-बहनों ने रात-दिन अखंड योग कर दादी को योग के माध्यम से अपने शुभ वायब्रेशन्स और श्रद्धांजलि अर्पित किये।

दादी के साथ रही सखी की तरह

शुरू से ही दादी हृदयमोहिनी के साथ सखी की तरह रही। दादी का बचपन से ही शांत और गंभीर स्वभाव था। उनकी बुद्धि की लाइन इतनी क्लीयर थी कि कुछ ही सेकंड में वह ध्यानमग्न हो जाती थीं। उनका जीवन दिव्यता, पवित्रता और योग-साधना के प्रति अद्भुत लगन का मिसाल था। - **दादी रतनमोहिनी, अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़।**

हम सभी को परमात्मा पिता से मंगल मिलन कराने वालीं, परमात्मा की संदेशवाहक दादी व्यक्त रूप से ज़रूर हम सबके बीच नहीं रहीं लेकिन उनके द्वारा दी गईं अव्यक्त शिक्षाएं सदा भाई-बहनों का मार्गदर्शन करती रहेंगी। - राजयोगी **ब्र.कु. निर्वैर, महासचिव, ब्रह्माकुमारीज़।**

दादीजी का प्यार, स्नेह, दुलार और वात्सल्य बचपन से ही मिला। दादीजी का एक-एक कर्म आदर्श कर्म होता था। उनके साथ रहने पर ऐसी अनुभूति होती थी कि जैसे कोई दिव्य फरिश्ते के साथ हैं। उन्होंने योग-तपस्या से खुद को इतना शक्तिशाली बना लिया था कि उनके संपर्क में आने वाले हर एक भाई-बहन को उस शक्ति की अनुभूति होती थी। - **ब्र.कु. जयंती, यूरोपीय देशों में ब्रह्माकुमारीज़ की निदेशिका।**

राष्ट्रपति सहित देश-विदेश के गणमान्य लोगों ने भी जताया शोक

महामहिम राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद, उपराष्ट्रपति एम.वेंकैया नायडू, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, गृहमंत्री अमित शाह, भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जे.पी. नड्डा, पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी, छ.ग. के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल, म.प्र. के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान, राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत व राज्यपाल के द्वारा भेजे गए शोक संदेश को पढ़कर सुनाया। अंतिम संस्कार के दौरान संस्थान के कार्यकारी सचिव राजयोगी ब्र.कु. मृत्युंजय, ऑस्ट्रेलिया की निदेशिका ब्र.कु. निर्मला दीदी, यूरोप सेवाकेन्द्रों की निदेशिका ब्र.कु. जयंती दीदी, जर्मनी सेवाकेन्द्रों की निदेशिका ब्र.कु. सुदेश दीदी, अमेरिका की ब्र.कु. मोहिनी दीदी, नैरोबी अफ्रीका से ब्र.कु. वेदांती दीदी सहित सभी ने जताया गहरा शोक।

डॉक्टर बोले - दादी के चेहरे पर कभी दर्द की फीलिंग नहीं देखी

मुम्बई से आए सैफी हॉस्पिटल में दादीजी का इलाज करने वाले डॉक्टर्स डॉ. दीपेश अग्रवाल, डॉ. प्रसन्ना, डॉ. आकाश शुक्ला, डॉ. निपुन गंगवाला, डॉ. मनोज चावला, डॉ. जिगर देसाई ने अपने-अपने अनुभव बताते हुए कहा कि हम खुद को भाग्यशाली समझते हैं कि दादीजी जैसी दिव्य और महान आत्मा का इलाज करने का मौका मिला। हमारे जीवन का यह पहला अनुभव रहा कि मरीज़ के इलाज के दौरान दिव्य अनुभूति हुई। जैसे ही दादीजी के रूम में जाते थे तो मन को शक्तिशाली फीलिंग आती थी। बीमारी के बाद भी दादीजी के चहरे पर कभी दर्द, दुःख या उदासी की फीलिंग नहीं देखी। दादीजी के साथ के अनुभव को शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता।

OM-2- 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 25/03/2021 6:18 PM Page 4

परमात्म शांतिदूत फरिश्ता बन उड़ चली

दादी हृदयमोहिनी के बचपन का नाम शोभा था। आपका जन्म वर्ष 1928 में कराची में हुआ था। आप जब आठ वर्ष की थीं तब संस्था के साकार संस्थापक ब्रह्मा बाबा द्वारा खोले गए ओम निवास बोर्डिंग स्कूल में दाखिला लिया। यहाँ आपने चौथी कक्षा तक पढ़ाई की। स्कूल में बाबा और मम्मा(संस्थान की प्रथम मुख्य प्रशासिका) के स्नेह, प्यार और दुलार ने इतना प्रभावित किया कि छोटी-सी उम्र में ही अपना जीवन उनके समान बनाने का निश्चय किया। वहीं आपकी लौकिक माँ भक्ति-भाव से परिपूर्ण थीं।

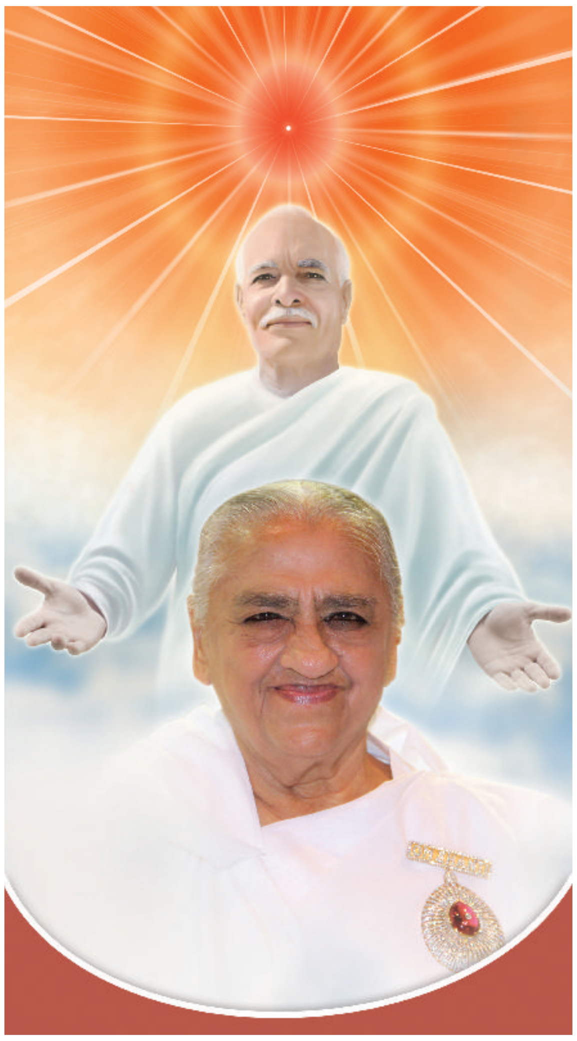

- **दिव्य दृष्टि का था वरदान, 1969 से 2016 तक परमात्मा के संदेशवाहक की निभाई भूमिका**
- **एक साल पहले दादी जानकी जी के निधन के बाद नियुक्त की गई थीं ब्रह्माकुमारीज़ की मुख्य प्रशासिका**
- **आठ साल की उम्र में ब्रह्मा बाबा द्वारा खोले गए बोर्डिंग स्कूल में लिया था प्रवेश**
- **वर्ष 1928 में कराची में हुआ था जन्म, मात्र चौथी कक्षा तक की थी पढ़ाई**
- **हिन्दी-अंग्रेजी और गुजराती भाषा का था ज्ञान**
- **विश्व के कई देशों में दिया आध्यात्मिकता का संदेश**
- **नॉर्थ उड़ीसा विश्वविद्यालय ने 2017 में डॉक्टर ऑफ लिटरेचर की उपाधि से किया था विभूषित**

छोटी आयु में ही हुआ था दिव्य साक्षात्कार

तीक्ष्ण बुद्धि होने से वे जब भी ध्यान में बैठतीं तो शुरुआत के समय से ही दिव्य अनुभूतियां होने लगीं। यहाँ तक कि कई बार ध्यान के दौरान दिव्य आत्माओं के साक्षात्कार भी हुए, जिनका ज़िक्र उन्होंने ध्यान के बाद ब्रह्मा बाबा और अपनी साथी बहनों से भी किया।

शांति, गंभीर और गहन व्यक्तित्व की प्रतिमूर्ति

दादी हृदयमोहिनी की सबसे बड़ी विशेषता थी उनका गंभीर व्यक्तित्व। वे गहन चिंतन की मुद्रा में हमेशा रहतीं। धीरे-धीरे उम्र के साथ जब

दादीजी को कभी हलचल में व उदास नहीं देखा

निजी सचिव व वर्ष 1985 में 15 साल की उम्र से दादी के साथ रहीं नीलू बहन ने बताया कि मैं खुद को भाग्यशाली समझती हूँ कि मुझे बचपन से ही दादीजी के अंग-संग रहने का सौभाग्य मिला। दादीजी हॉस्पिटल में भर्ती होने के बाद भी कभी उनको मन से विचलित या परेशान होते नहीं देखा। बीमारी की स्थिति में भी उनका चेहरा और मन सदा परमात्मा के ध्यान में लगा रहता था।

दादी हृदयमोहिनी हमेशा साढ़े तीन बजे उठ जाती थीं और डेढ़ से दो घंटे तक साधना का दौर चलता था। इसके बाद आध्यात्मिक अध्ययन। उनकी खासियत थी कि वे हमेशा ज़्यादा से ज़्यादा ध्यान में और चुप रहती थीं। जीवन में कभी किसी बात को लेकर इच्छा जागृत नहीं हुई।

वे हमेशा 4 बजे सुबह दिव्य दृष्टि के ज़रिए अंतरध्यान हो जाती थीं। महिलाओं को लेकर उनकी हमेशा यही भावना और उद्देश्य होता कि प्रत्येक महिला शक्ति के रूप में जागृत हो। जब भी वे किसी महिला को देखतीं तो यही कहती थीं कि आप शक्ति हैं और दुर्गा स्वरूपा। वे हमेशा यही कहती थीं कि जब मैं कर सकती हूँ तो आप लोग क्यों नहीं ! वे हमेशा एक स्मरण का ज़िक्र करते हुए उदाहरण देती थीं कि 1950 के बाद जब वे भारत आईं तो अचानक से एक दिन शाम चार बजे ब्रह्मा बाबा ने उन्हें लखनऊ में सेवा में जाने को कहा। उन्होंने कहा कि उस दौरान कुछ भी तय नहीं था कि कहाँ जाना है और कैसे जाना है। लेकिन ब्रह्मा बाबा पर ऐसा भरोसा था कि उनका कहना और हमारा करना। फिर हम लखनऊ के लिए रवाना हो गए। वहाँ जाने के बाद राजभवन में जाने का मौका मिला और वहीं से उत्तरप्रदेश में सेवाओं का विस्तार हुआ।

दादी मात्र 8-9 वर्ष की थीं तब से उन्हें दिव्य लोक की अनुभूति होने लगी। उनकी बुद्धि की लाइन इतनी साफ और स्पष्ट थी कि ध्यान में जब वें खुद को आत्मा समझकर परमात्मा का ध्यान करतीं तो उन्हें यह आभास ही नहीं रहता था कि वह इस ज़मीन पर हैं।

सादगी, सरलता और सौम्यता की थीं मिसाल

दादी का पूरा जीवन सादगी, सरलता और सौम्यता का मिसाल रहा। बचपन से ही विशेष योग-साधना के चलते दादी का व्यक्तित्व इतना दिव्य हो गया था कि उनके सम्पर्क में आने वाले लोगों को उनकी तपस्या और साधना की अनुभूति होती थी। उनके चेहरे पर तेज का आभामंडल उनकी तपस्या की कहानी साफ बयां करता था।

1969 में ब्रह्मा बाबा के निधन के बाद बनीं परमात्म दूत

18 जनवरी 1969 में संस्था के संस्थापक ब्रह्मा बाबा के अव्यक्त होने के बाद परमात्म आदेशानुसार दादी हृदयमोहिनी ने परमात्म संदेशवाहक और दूत बनकर लोगों के लिए आध्यात्मिक ज्ञान और दिव्य प्रेरणा देने की भूमिका निभाई। दादीजी ने 2016 तक संस्थान के मुख्यालय माउण्ट आबू में हर वर्ष आने वाले लाखों भाई-बहनों को परमात्मा का दिव्य संदेश देकर योग-तपस्या बढ़ाने के लिए प्रेरित किया। एक बार चर्चा के दौरान दादीजी ने बताया कि जब मैं मन की शक्ति से वतन में जाती हूँ तो आत्मा तो शरीर में रहती है लेकिन मुझे इस शरीर का भान नहीं रहता। उस दौरान मेरे द्वारा जो वचन उच्चारित होते हैं वह भी मुझे याद नहीं रहते।

बाबा से दादीजी को हुए थे साक्षात्कार

एक साक्षात्कार के दौरान दादी ने बताया था कि जब वह 9 वर्ष की थीं और अपने मामा के यहां गई थीं, तभी उनके घर ब्रह्मा बाबा का आना हुआ। यहाँ बाबा से उन्हें दिव्य साक्षात्कार हुआ था। बाबा हम बच्चों का इतना ख्याल रखते थे कि खुद अपने हाथ से दूध में काजू-बादाम डालकर खिलाते थे। बाबा का प्यार, स्नेह इतना मिला कि कभी भी लौकिक माँ-बाप की याद नहीं आई।

14 साल तक सिंध हैदराबाद में रहकर की कठिन साधना

दादी हृदयमोहिनी ने 14 वर्ष तक बाबा के सानिध्य में रहकर कठिन योग-साधना की। इन वर्षों में खाने-पीने को छोड़कर दिन-रात योग-साधना में वह लगी रहती थीं। इसके साथ ही बाबा एक-एक सप्ताह मौन कराते थे। तभी से दादी का स्वभाव बन गया था कि जितना काम हो उतना ही बात करती। अंत समय तक वह इसी स्थिति में रहीं।

नॉर्थ उड़ीसा विश्वविद्यालय ने प्रदान की डिग्री

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी को नॉर्थ उड़ीसा विश्वविद्यालय, बारीपदा ने डी.लिट(डॉक्टर ऑफ लिटरेचर) की उपाधि से विभूषित किया है। दादी को यह उपाधि उड़ीसा में प्रभु के संदेशवाहक के रूप में लोगों में आध्यात्मिकता का प्रचार-प्रसार करने और समाजसेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान पर प्रदान की गई। संस्था की 80वीं वर्षगांठ पर मुख्यालय माउण्ट आबू,आबू रोड के शांतिवन में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय महासम्मेलन एवं सांस्कृतिक महोत्सव में 28 मार्च 2017 को नॉर्थ उड़ीसा विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. प्रफुल्ल कुमार मिश्रा ने उपाधि प्रदान की। उन्होंने दादी के कार्यों की सराहना करते हुए इसे गौरव का विषय बताया था। कुलपति मिश्रा ने कहा था कि यह डिग्री देते हुए बहुत ही गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ। संस्था विश्व शांति, प्रेम, भाईचारा और आध्यात्मिकता के क्षेत्र में जो कार्य कर रही है वह अनुपम उदाहरण है।

दादी जानकी के निधन के बाद बनी थीं मुख्य प्रशासिका

पिछले साल 27 मार्च 2020 को संस्थान की मुख्य प्रशासिका 104 वर्षीय राजयोगिनी दादी जानकी जी के निधन के बाद उनको संस्थान की मुख्य प्रशासिका नियुक्त किया गया था। अस्वस्थ होने के बाद भी उनमें दिन-रात लोगों का कल्याण करने की भावना लगी रहती थी। दादीजी मुम्बई से ही संस्थान की गतिविधियों का सारा समाचार लेतीं और समय प्रति समय निर्देशन देतीं।

माननीय भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी को रक्षासूत्र बांधते हुए दादी हृदयमोहिनी जी।

भारत के महामहिम राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के साथ दादी हृदयमोहिनी जी।

भारत के महामहिम राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी जी को शिव स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए दादी हृदयमोहिनी जी।

दादी हृदयमोहिनी जी का अभिवादन करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष जे.पी. नड्डा जी।

आध्यात्मिक कार्यक्रम में कैंडल लाइटनिंग करते हुए मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि जी, संयुक्त मुख्य प्रशासिका दादी हृदयमोहिनी जी,भारत के उपराष्ट्रपति भैरों सिंह शेखावत जी।

OM-2- 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 25/03/2021 6:18 PM Page 5

बाबा कहते... बच्चे! मिट्टी में पांव नहीं रखना

दादी हमेशा कहतीं, हम बाबा के लाडले बच्चे हैं ना! लाडले बच्चे बाबा के प्यारे बच्चे कभी धरती पर पांव नहीं रखो। क्योंकि हम बाबा के दिल के झूले में झूलने वाले बच्चे हैं, बाबा की गोद में जाकर बैठना है, बाबा के दिलतख्त पर बैठना है। हमें बाबा ने अपना दिलतख्त दिया है तो धूल-मिट्टी पर पांव नहीं रखना। देखो, परमात्म तख्त हमें मिल गया है, जिसे पाने के लिए भक्त लोग प्रार्थनायें करते रहते हैं। और हमें स्वयं बाबा ने दिलतख्त दिया है। कितने भाग्यशाली हैं हम! सोचो, हमें खेलना है तो धूल-मिट्टी में नहीं खेलना, धूल-मिट्टी माना देह-अभिमान। देह-अभिमान के वश कोई भी कार्य हमें नहीं करना है।

मधुबन का वायुमण्डल इतना न्यारा और प्यारा है कि जहाँ सारे ब्रह्मा वत्स आकर आपस में मिलते हैं। ये रूहानी आकर्षण दिव्य अलौकिक आभा से आलोकित है। ऐसे वातावरण में हमें अपने पुरुषार्थ की रफ्तार को और तीव्रता से बढ़ाना चाहिए।

ब्रह्मा बाबा ने लास्ट में क्लास कराने के बाद तीन शब्द उच्चारण किये, निराकारी, निर्विकारी और निरहंकारी। ये तीन शब्द अगर हम सोचें तो हम भी तीव्र पुरुषार्थी बन जायेंगे। तीव्र पुरुषार्थी माना अपने आप से पूछो 'मैं कौन'। तीव्र पुरुषार्थी और स्लो पुरुषार्थी के बीच एक शब्द का अंतर होता है। तीव्र पुरुषार्थ वाला हमेशा ये सोचेगा कि जो बाबा ने कहा है, वो मुझे करना 'ही' है। जबकि स्लो पुरुषार्थी 'करेंगे, हो जायेगा, अभी तो समय पड़ा है, समय आने पर कर लेंगे' ये 'गें...गें...' वाला स्लो पुरुषार्थी की श्रेणी में आ जायेगा। तो हमें तो एक ही शब्द याद रखना है कि जो बाबा ने कहा, वो मुझे करना 'ही' है। तीव्र पुरुषार्थी कभी ये नहीं सोचेगा कि कैसे होगा, लेकिन मुझे करना ही है, इस विश्वास के साथ करने लग जायेगा। स्लो पुरुषार्थी बीच-बीच में यह सोचेगा कि अभी तो डेट फिक्स नहीं हुई है, अभी कौन सम्पूर्ण बना है, समय पर हो जाऊंगा, ये है स्लो पुरुषार्थी। तो स्लो पुरुषार्थी और तीव्र पुरुषार्थी, आप कौन-सा बनना चाहेंगे? समय प्रति समय बाबा हमें समय की नॉलेज दे रहे हैं। हो जायेगा नहीं, करना ही है। बाबा का कहना और हमारा करना, बस। तब ही बाबा के दिलतख्त पर भी बैठ सकेंगे और मंज़िल पर भी पहुंचेंगे। अभी तीव्र पुरुषार्थ करने का समय है, फास्ट जाने का समय है। बाबा ने इशारा दिया है, और हमें करना ही है। तो ऐसे बाबा को बड़े प्यार से कहो, मेरा बाबा, मीठा बाबा, प्यारा बाबा, तो बस, तीव्र पुरुषार्थी बन जायेंगे।

96 वर्षीय दादी रतनमोहिनी ब्रह्माकुमारी संस्थान की बनीं मुखिया

शांतिवन। ब्रह्माकुमारी संस्थान ने दादी हृदयमोहिनी जी के निधन के पश्चात् 96 वर्षीय राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी जी को संस्थान के अंतर्राष्ट्रीय स्पीरिचुअल ऑर्गनाइज़ेशन की आध्यात्मिक मुखिया नियुक्त किया है। 16 मार्च, 2021 को मैनेजमेंट कमेटी की बैठक में यह निर्णय लिया गया। दादी रतनमोहिनी अब विश्व के 5500 से ज़्यादा सेवाकेन्द्रों व सभी शहरों से लेकर गांव-ढाणियों में संचालित होने वाले 30 हज़ार से अधिक पाठशालाओं की आध्यात्मिक मुखिया भी होंगी। इससे पहले उनके पास संस्थान की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका का दायित्व था। दादी रतनमोहिनी का जन्म 25 मार्च,1925 को सिंध हैदराबाद में हुआ था। वे 11 साल की उम्र में ब्रह्माकुमारी संस्थान के संस्थापक प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के संपर्क में आईं। दादी देश के 4600 से अधिक सेवाकेन्द्रों की 46 हज़ार बहनों को प्रशिक्षण दे चुकी हैं। ब्रह्माकुमारी संस्थान के सूचना निदेशक ब्र.कु. करुणा के अनुसार राजयोगिनी ईशू दादी एडिशनल स्पीरिचुअल चीफ तथा ब्र.कु. डॉ. निर्मला दीदी ज्ञान सरोवर एकेडमी में ज्वाइंट स्पीरिचुअल चीफ का प्रभार देखेंगी।

मीडिया सेवाओं के पुरोधा प्रो. कमल दीक्षित को हृदय से श्रद्धासुमन

ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया विंग की सेवाओं के आधार स्तंभ, अपनी निर्माणता द्वारा नव निर्माण का कार्य करने वाले, हम सबके स्नेही, अथक सेवाधारी प्रो. कमल दीक्षित जी ने दिनांक 10 मार्च 2021 को अपना पुराना शरीर छोड़ बापदादा की गोद ली। आपके अलौकिक जीवन की शुरुआत तब हुई जब आप आज से लगभग 45 वर्ष पूर्व इंदौर में नव भारत टाइम्स के सम्पादक थे। तब इंदौर ज़ोन के क्षेत्रीय निदेशक रहे आदरणीय ओमप्रकाश भाईजी के सम्पर्क में आये और उनसे पहली मुलाकात में ही ब्रह्माकुमारी संस्थान के प्रति आपका उच्च दृष्टिकोण बन गया और आप राजयोग शिविर हेतु माउण्ट आबू गये, तब से लेकर सतत् आपका संस्था से सम्पर्क बना रहा और आगे चलकर आप रेगुलर स्टूडेंट बन गये। ओमप्रकाश भाईजी की प्रेरणा से प्रतिवर्ष मुख्यालय आबू में होने वाली मीडिया कॉन्फ्रेन्स में आप मुख्य वक्ता के रूप में भाग लेते रहे तथा सारे भारत वर्ष में आपने मीडिया के अनेक कार्यक्रम आयोजित किये एवं मीडियाकर्मियों के लिए 'सकारात्मक मीडिया' पाठ्यक्रम तैयार किया।

यज्ञ में ऐसे कम लोग हैं जिनकी राष्ट्रीय स्तर पर अपनी स्वयं की पहचान हो, आदरणीय कमल दीक्षित जी ऐसे ही गिने-चुने लोगों में से एक थे। आपने ब्रह्माकुमारी संस्थान में मीडिया की नई पौध तैयार करने में अहम भूमिका निभाई। आपके अंदर विशेष मीडिया के माध्यम से बाबा को प्रत्यक्ष करने का ऐसा जुनून था जिसके तहत आपने मूल्यानुगत मीडिया अभिक्रम समिति का गठन किया एवं राजी-खुशी नामक पत्रिका के माध्यम से अध्यात्म को जन-जन तक पहुंचाने में विशेष रोल अदा किया। मीडिया जगत के लोगों को ब्रह्माकुमारी संस्थान के निकट लाने में अपने सराहनीय योगदान के लिए सदैव याद किये जायेंगे।

बाबा के ऐसे लाडले, अनमोल रतन, विश्व सेवाधारी प्रो. कमल दीक्षित जी को सहृदय से श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं।

- नेशनल कनवेनर,सोसायटी ऑफ मीडिया इनीशिएटिव फॉर वैल्यूज़(एस.एम.आई.वी.)
- एडिटर, 'राजी-खुशी'- एडिटर, 'मुल्यानुगत मीडिया' मैगज़ीन(प्रोमोटिंग वैल्यू-बेस्ड जर्नलिज़्म)
- कोर कमेटी मेम्बर,ब्रह्माकुमारीज़,मीडिया विंग
- पूर्व एच.ओ.डी.,जर्नलिज़्म,माखनलाल चतुर्वेदी नेशनल युनिवर्सिटी ऑफ जर्नलिज़्म,भोपाल
- पूर्व रेसिडेंट एडिटरः नव भारत,इंदौर; राजस्थान पत्रिका,जयपुर; महाकौशल डेली,रायपुर
- प्रोमोटर, ट्रेनर एंड रिसर्चर ऑफ वैल्यू बेस्ड मीडिया, मीडिया
- राइटिंग स्किल, रूरल जर्नलिज़्म एंड डेवलपमेंट कम्युनिकेशन।

फिल्म अभिनेत्री रवीना टंडन से मिलते हुए भेंट करते हुए दादी हृदयमोहिनी जी।

फिल्म अभिनेत्री रवीना टंडन को ईश्वरीय सौगात देते हुए दादी हृदयमोहिनी जी।

सीनियर राजनीतिज्ञ लाल कृष्ण अडवानी जी के साथ दादी हृदयमोहिनी जी।

महामहिम राष्ट्रपति सर्वेपल्ली राधाकृष्णन जी को ईश्वरीय सौगात भेंट करने के पश्चात् साथ हैं दादी हृदयमोहिनी जी।

आध्यात्मिक कार्यक्रम में शंकराचार्य जी के साथ दादी हृदयमोहिनी जी।

भारत के महामहिम राष्ट्रपति श्रीमति प्रतिभा पाटिल के साथ दादी हृदयमोहिनी जी।

राजस्थान की माननीय मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे के साथ दादी हृदयमोहिनी जी।

अमेरिका नासा की अंतरिक्ष वैज्ञानिक सुनीता विलियम्स को शिव स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए दादी हृदयमोहिनी जी।

OM-2- 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 25/03/2021 6:18 PM Page 6

दादियों की स्मृतियां आज भी नहीं हो पायीं ओझल

ओम शान्ति मीडिया कार्यालय,आनंद भवन,शांतिवन में दादी हृदयमोहिनी जी व दादी जानकी जी के आगमन पर उन्हें शिव अवतरण एवं ओम शान्ति मीडिया पत्रिका के बारे में बताते हुए सम्पादक ब्र.कु. गंगाधर भाई। साथ में मीडिया प्रभाग के अध्यक्ष भ्राता करुणा भाई तथा ओम शान्ति मीडिया के सभी सदस्य।

- अपने परिवार से मिलीं परिवार की मुखिया
- प्रभु प्रेम में लवलीन दादियों ने परिवार में बांटा प्यार
- दादियां मुखिया नहीं, सखियां बनकर मिलीं
- अपनों ने अपनों से मिलने का आनंद लिया यहां
- प्रेम, स्नेह और वात्सल्य की प्रतिमूर्ति को निहारा सभी ने
- दादी हृदयमोहिनी ने मीठी दृष्टि देकर सबके हृदय को मोह लिया
- दादी में सरलता और समानता का सेतु पाया
- राजा जनक की भांति जीवन का मूल मंत्र दिया दादी जानकी ने

28-01-2016 में दादी जानकी के 100वें जन्मदिन के निमित्त ओम शान्ति मीडिया कार्यालय,आनंद भवन,शांतिवन में आयोजित कार्यक्रम में तत्कालिन मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी जी तथा तत्कालिन अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका दादी हृदयमोहिनी जी(दादी गुल्ज़ार) का आना हुआ। वहाँ पर मधुबन के मुख्य भाई-बहनों के साथ दादी जानकी का जन्म दिन बड़े ही उमंग-उत्साह से मनाया गया। दादी जानकी जी ने कहा कि परमात्म संदेश हर जन तक पहुंचाने का एक सशक्त माध्यम है मीडिया। पर हमारी आज संसार की जो मीडिया है, उससे ये हमारे स्पीरिचुअल मीडिया बहुत ही अलग तरह से सत्य को लोगों तक पहुंचाता है। कहते हैं सत्य अपने आप में एक शक्ति है और सत्यता की शक्ति हरेक के दिल तक पहुंचेगी तो अंधकार तो मिटना ही है। उसके लिए दादी जी ने कहा कि पत्रिका का नाम ही है 'ओम शान्ति मीडिया', तो दादी ने उसी पर और कारगर रीति से दुनिया के सामने पहुंचाने के सम्बंध में बहुत सारगर्भित बात करते हुए कहा कि एक बार ओम शांति बोलने से लाइट हो जाते हैं, दूसरी बार ओम शांति बोलने से अपने अंदर माइट अर्थात् शक्ति आ जाती है और तीसरी बार ओम शांति बोलने से एवरीथिंग राइट हो जाता है। आगे दादी ने कहा कि कलम में ताकत देने का काम कमल फूल समान जीवन है। जब हमारा जीवन व्यर्थ से मुक्त होगा तभी हम कमल फूल के समान अपने को बना सकेंगे और फिर जो परमात्मा का संदेश है वो जन-जन तक पहुंचाने में कारगर बनेगा।

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी ने कहा कि आज मीडिया वालों से मिलकर हमें बहुत खुशी है। अब समय आया है कि जन-जन तक ये संदेश पहुंचे कि ब्रह्माकुमारियां क्या कर रही हैं। उनका उद्देश्य क्या है, ये स्पष्ट रूप में जनमानस तक पहुंचना ज़रूरी है। चारों तरफ ये आवाज़ निकले कि हमारा बाबा आ गया। अब वो दिन दूर नहीं जब भारत पुनः विश्व गुरू बनेगा।

दोनों दादियों ने पूरे ओम शान्ति मीडिया कार्यालय को देखा और हर चेम्बर में जाकर पूर्णतः जानकारी ली तथा ओम शान्ति मीडिया से जुड़े सभी भाई-बहनों से प्यार से मिलीं। दादियां करीब तीन घंटे कार्यालय में रहकर सब के साथ बाबा के साथ के संस्मरण साझा किये और एक रुहानियत भरे माहौल में दादियों को नज़दीक पाकर, उनसे रूबरू होकर सभी बहुत ही दिल से गद्गद् हुए।

इस अवसर पर मधुबन के राजयोगी ब्र.कु. सूर्य, मल्टीमीडिया चीफ राजयोगी ब्र.कु. करुणा, शिक्षा प्रभाग के अध्यक्ष राजयोगी ब्र.कु. मृत्युंजय, ओम शान्ति मीडिया के सम्पादक राजयोगी ब्र.कु. गंगाधर, ओम शान्ति मीडिया के सभी सदस्यों व अन्य मुख्य भाई-बहनों सहित नेपाल क्षेत्र की मुख्य निर्देशिका राजयोगिनी ब्र.कु. राज दीदी, रशिया सेंटपीटर्सबर्ग क्षेत्र की मुख्य संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. संतोष दीदी तथा मिडल ईस्ट में बेरूत की संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. अरुणा दीदी भी उपस्थित थीं।

» सच्चे प्रेम की परख «

- ब्र.कु. उषा,वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

प्यार एक बहुत सुन्दर चीज़ थी। एक एनर्जी थी। जिस एनर्जी से व्यक्ति खुद भी एनर्जाइस्ड हो जाता था। लेकिन प्यार के कई लेवल हैं। एक है शारीरिक प्यार, दूसरा है दिव्य प्यार, और तीसरा है परमात्म प्यार। ये तीन प्यार हैं। जो परमात्म प्यार है वो हमें ऊपर उठाता है और जो शारीरिक प्यार है वो व्यक्ति को गिराता है। यह एक बन्धन बन जाता है। और ये बन्धन जो है कभी-कभी घुटन का अनुभव कराता है। और इस घुटन के कारण ब्रेकअप होता है क्योंकि कोई भी इंसान बंधन में नहीं रहना चाहता। हर व्यक्ति आज़ाद जीवन जीना चाहता है। ऐसा नहीं होता कि सामने वाले सोचे कि जैसा मैं कहूँ वो वैसा ही करे। मैं जैसा चाहूँ वैसा ही होना चाहिए। तो वहाँ प्यार के अन्दर घुटन महसूस होने लगती है। लेकिन ऐसा भी नहीं है कि हम मनुष्यों से प्यार करें ही नहीं, उनसे भी प्यार करें। लेकिन वो प्यार शारीरिक या वासनायुक्त न हो। वो प्यार जितना दिव्य होगा, जितना हम एक-दूसरे को फुल फ्रीडम देंगे, दिव्य प्यार उसको कहते हैं जहाँ कोई भी प्रकार की कमी नहीं है। दिव्य प्यार माना एक सोल लेवल पर लव है।

वो एक फिजिकल लेवल पर लव है। लेकिन ये भी है कि हर किसी को ये भी नहीं पता कि सोल क्या है। जैसे कहते हैं ना कि ये मेरी सोलमेट है। तो सोलमेट अगर है तो सोलमेट का प्यार भी वैसा होना चाहिए। उसको दिव्य प्यार कहते हैं। लेकिन फिजिकल लव माना एक लस्ट(वासना) हो गया। तो वो एक बहुत निम्न कक्षा का प्यार हो गया। बहुत नीचे का प्यार हो गया। लोग जो बहुत कुछ सोचते थे कि इसमें बहुत कुछ प्राप्ति होगी लेकिन इसमें कुछ नहीं है। तो फिर व्यक्ति को लगता है कि फिर क्या है? तो इसीलिए वहाँ से ब्रेकअप। वहाँ से उब जाते हैं। फिर एक-दूसरे की कमी-कमज़ोरी दिखाई देने लगती है कि नहीं मेरी ये बात इससे मैच नहीं हो रही है। तो हर छोटी-छोटी बात में भी जो एक्सेप्टेंस लेवल (स्वीकृति स्तर) था वो धीरे-धीरे खत्म होता जाता है। और इसीलिए जहाँ एक्सेप्टेंस खत्म हो गया वहाँ से फिर सोचते हैं कि ये मेरे लिए नहीं है, या वो मेरे लिए नहीं है तो वहाँ से दूर होने लगते हैं।

जो पहले माना हर घंटे फोन होता था, हर घंटे मन होता था कि उसके बारे में हम जाने, उसके बारे में हम समझें। फिर उसके बाद सारे दिन में एक फोन, तो वहाँ फिर लगता है कि ये व्यक्ति अवॉइड कर रहा है मुझे, इग्नोर कर रहा है। और जहाँ ये इग्नोर कर रहा है ये फीलिंग आई तो नैचुरल है उसको लगता है कि मैं भी इसको इग्नोर करूँ। उसका भी इगो है। तो वास्तव में अगर देखा जाये तो जहाँ इगो है ना वहाँ लस्ट भी है। वहाँ फिर गुस्सा भी है, क्रोध भी आता है। तो यहाँ से सब इंटरकनेक्टेड हैं। पहले जब लोग होते थे तो उनका एक-दूसरे से इतना दिल नहीं भरता था। परन्तु अब जल्दी ही दिल भर जाता है।

पहले जब प्यार होता था ना तो पहले ऐसे प्यार नहीं होता था जैसे आजकल होता है। अपरिपक्व उम्र में किसी को पसंद करने लगते हैं, किसी की तरफ आकर्षित होते हैं, और वो आकर्षण जो है वो एक प्रकार का इल्यूशन कहो या हेल्यूनेशन(मोह माया) कहो। बस कहते हैं कि लव हो गया। लव की परिभाषा मालूम नहीं है कि लव बंधन नहीं है। लव फ्रीडम है। एक जैसे खुला आकाश देते हैं एक-दूसरे को उड़ने के लिए, आगे बढ़ने के लिए। जहाँ हम सपोर्ट बनते हैं वहाँ हम रोकने का प्रयत्न नहीं करते कि नहीं मेरे हिसाब से चलें। मेरे हिसाब से ही करना चाहिए। ये बंधन नहीं होता है प्यार में। तो प्यार का मतलब है फ्रीडम। आजादी है, एक सपोर्ट हम बनते हैं। और सपोर्ट बन करके हम उनको आगे बढ़ाते हैं और वो सपोर्ट बन करके हमें आगे बढ़ाते हैं। ये अंडरस्टैंडिंग होती है।

राजगढ़-ब्यावरा(म.प्र.)। त्रिमूर्ति शिव जयंती पर आयोजित 'सर्व धर्म समभाव सम्मेलन' में दीप प्रज्वलित करते हुए बायें से ब्र.कु. बाबूलाल,मा.आबू, गायत्री परिवार से स्वभाव आचार्य, जिला कांग्रेस महामंत्री राशिद जमील, पूर्व विधायक रघुनंदन शर्मा, सिक्ख धर्म से इंद्रजीत सिंह तथा ब्र.कु. मधु बहन।

ओम शान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें....

कार्यालय - ओम शान्ति मीडिया

संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न - 5, आबू रोड (राज.) 307510

सम्पर्क- M- 9414006096, 9414182088, Email-omshantimedia@bkivv.org

सदस्यता शुल्क : भारत - वार्षिक 200 रूपये, तीन वर्ष 600 रूपये, आजीवन 4500 रूपये। विदेश - 2500 रूपये (वार्षिक)

कृपया सदस्यता शुल्क 'ओम शान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शांतिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।

OM-2- 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 25/03/2021 6:18 PM Page 7

ब्रह्माकुमारी संस्थान की आधार स्तम्भ, पवित्रता की पराकाष्ठा से परिवर्तन को लाने वाला ये संगठन- ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की वरिष्ठ दादियां बायें से दादी मनोहर इन्द्रा, दादी गंगे, दादी रतनमोहिनी, दादी हृदयमोहिनी(दादी गुल्ज़ार), दादी जानकी, दादी प्रकाशमणि, दादी निर्मलशांता, दादी चंद्रमणि।

बाबा का कहना... दादी का करना

जब संगठन में हम योग में बैठते हैं और एक ही संकल्प में स्थित होकर बैठते हैं तो वायुमण्डल कितना पावरफुल हो जाता है! जब सबका एक ही संकल्प हो और एक ही संकल्प में स्थित हों, तब ही वायुमण्डल को परिवर्तित कर सकेंगे।

बातें तो आयेंगी ही, बातों का काम है आना। लेकिन बाबा के बच्चों का काम है बनना। जो बाबा ने कहा, वह करना। कर्म तो करना ही पड़ता है, कर्म बिना तो नहीं रह सकेंगे ना! कर्म करते हुए भी एकदम शरीर के भान से परे हो जायें। हमने ब्रह्मा बाबा को देखा, बाबा सबकुछ करते थे, लेकिन बिल्कुल देहभान से परे होते थे, जो हमें फील होता था। हमें भी बाबा के समान बनना है ना!

ब्रह्मा बाबा ने शरीर छोड़ा तो हमें वरदान देकर गये 'अशरीरी भवः'। साथ-साथ हमें शिक्षा भी दी कि कर्मयोगी बनो। कर्मयोगी बनने का मतलब ही है कमल फूल समान बनकर रहना। देखो, कमल का फूल पानी व कीचड़ में रहता, फिर भी उससे न्यारा रहता, अलिप्त रहता। रहेगा पानी में, पर पानी की एक बूंद भी उसको स्पर्श नहीं करती। हमने ब्रह्मा बाबा को प्रैक्टिकल में देखा, बाबा शरीर में रहते भी शरीर के भान से न्यारे और प्यारे रहते थे। सदा आत्मिक स्वरूप में स्थित रहो तो आपका चेहरा और चलन दोनों से ही रूहानियत की खुशबू आयेगी। बाबा हमेशा उसे ही देखता है, जिसने, जो बाबा ने कहा, उसे स्वरूप में लाया। जो आत्मिक स्वरूप में स्थित होंगे, उनका चेहरा हमेशा खिला हुआ होगा, खुश होगा, तो कितना अच्छा लगेगा! आपने खिला हुआ गुलाब का फूल देखा है ना! कितना सुंदर लगता है! तो बाबा के बच्चे भी वैसे ही गुलाब की तरह खिले हुए अच्छे लगेंगे ना! खिला हुआ चेहरा सबको अच्छा लगता है।

हमने ब्रह्मा बाबा को देखा, बाबा के सामने कितनी-कितनी बातें आती थीं, लेकिन बाबा का चेहरा हमेशा खुश रहता था। आई हुई बातों का प्रभाव चेहरे पर नहीं रहता था। बाबा हमेशा कहते थे- "मैं एक शिवबाबा का निमित्त बना हुआ बच्चा हूँ। बाबा ने मुझे निमित्त बनाया है। यह निमित्त मात्र मेरा शरीर रथ के रूप में लिया है। वर्सा तो शिवबाबा से ही मिलेगा, मेरे से नहीं।" ये ब्रह्मा बाबा की प्रैक्टिकल लाइफ थी- निर्विकारी जीवन। बाबा ने जो हमें तीन शब्द दिये हैं, उन तीन शब्दों में सारा ज्ञान भरा हुआ है। ये याद रखेंगे तो विकार हमें छू भी नहीं पायेगा। बाबा हमेशा कहता था कि वर्सा तो शिव बाबा से ही मिलेगा, मेरा तो ये केवल निमित्त रथ है। बाबा में कभी भी 'मैं-पन' नहीं था। सदा न्यारा और प्यारा। न्यारा-प्यारा रहकर बच्चों की पालना भी की। परमात्मा ने रथ में प्रवेश होकर कार्य भी किया, तो कितनी न्यारी और प्यारी स्थिति थी बाबा की! बेफिकर, निर्वैर होकर रहते थे।

एक बार बाबा के लौकिक रिश्तेदार बाबा से मिलने आये। ब्रह्मा बाबा को कहा- 'आप मेरी एक छोटी-सी आश पूरी कर देंगे तो मैं सब कुछ अर्पण कर दूंगा। मेरे पास बहुत धन है। मैं सबकुछ आपके चरणों में अर्पित कर दूंगा। बस, 'मुझे भगवान का साक्षात्कार करा दो। बाबा, आपके लिए क्या बड़ी बात है!' बाबा ने कहा- 'आपकी आश तो बहुत अच्छी है, लेकिन साक्षात्कार कराने की चाबी शिव बाबा के हाथ में है। दिव्य दृष्टि की चाबी हमें बाबा ने नहीं दी है। आप मान जाओ, मेरे हाथ में कुछ भी नहीं है, वो तो परमात्मा के हाथ में है। ये सुनकर उनका सम्बंधी उन्हें घूर कर देखने लगा और कहने लगा कि बाबा, आपने तो सबकी आशायें पूर्ण की हैं, सबको साक्षात्कार कराया है और आप मुझे सीधे ही कह रहे हो कि मेरे हाथ में कुछ भी नहीं है! तो बाबा कितने निर्मोही थे, ये हमने बाबा में प्रैक्टिकल में देखा। अहम का ज़रा भी अंश नहीं था। बाबा का ये जवाब सुनकर उनके सम्बंधी को बहुत आश्चर्य हुआ। ब्रह्मा बाबा ने, जो जवाब है वो साफ-साफ सुना दिया। पैसा क्या चीज़ है कर्मातीत के आगे! निर्मोही, नष्टोमोहा बनकर हमें आगे बढ़ना है चाहे कोई भी बात आवे। ऐसा नहीं कि बात नहीं आयेगी। माया छोड़ेगी थोड़े ही। लेकिन हमें सर्वशक्तिवान की शक्तियों को लेते रहना है और आगे बढ़ते रहना है, रुकना नहीं है। निर्मोही होकर रहना है।

बाबा ने हमें ये टाइटल दिया है, नष्टोमोहा स्मृतिर्लब्धा। इस स्थिति में यदि हम स्थित रहेंगे तो सबको न्यारे और प्यारे लगेंगे। बाबा ने हमें अधिकारी बनाया है। तो चेक करो, सारी दिनचर्या में हमें चेक करते रहना है। दिन में एक शब्द हमें सदा याद रहता है- वो शब्द है 'मेरा'। मेरा तो याद रहता है ना! तो आप याद करो 'मेरा कौन', बाबा। सिर्फ बाबा नहीं कहो, 'मेरा बाबा' कहो। तो मेरा तो याद रहेगा ना! दिन में बीच-बीच में 'मेरा' शब्द को याद करो। मेरा कौन, मेरा बाबा है ना!

वडोदरा-अटलादरा(गुज.)। महाशिवरात्रि पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान मंच पर उपस्थित हैं सांसद रंजन भट्ट, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. अरुणा, सह संचालिका ब्र.कु. पूनम, मीना बहन शैलेष भाई सोट्टा, बिंदिया शाह,डायरेक्टर,क्यूब कंसट्रक्शन, डॉ. मोना भट्ट,ऑनर,एच.सी.जी. कैंसर हॉस्पिटल, संगीता बहन,कॉर्पोरेटर, नरवीर सिंह,कॉर्पोरेटर तथा अन्य गणमान्य लोग।

इंदौर-ज्ञानशिखर(म.प्र.)। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए एयरपोर्ट डायरेक्टर आर्यमा सान्याल, ब्र.कु. हेमलता दीदी, म.प्र. कांग्रेस की उपाध्यक्षा अर्चना जायसवाल, आई.एम.ए. की सचिव साधना सोडानी, पंचम निषाद संगीत संस्थान की डायरेक्टर शोभा चौधरी, सनशाइन लॉयन क्लब की अध्यक्षा साधना सिंह, डॉ. शिल्पा देसाई, आनंद मूक बधिर संस्थान की डायरेक्टर मोनिका पुरोहित, ब्र.कु. अनीता तथा ब्र.कु. उषा।

OM-2- 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 25/03/2021 6:18 PM Page 8

नेपाल-बीरगंज। 85वीं मित्रूर्ति शिव जयंती महोत्सव के अंतर्गत पिलुवा स्थित ब्रह्माकुमारीज़ के निर्माणाधीन 'पीस रिट्रीट सेंटर पर आयोजित 'बृहत पत्रकार अभिनंदन समारोह' में दीप प्रज्वलित करते हुए प्रदेश नं 2 सरकार के माननीय उद्योग पर्यटन वन तथा वातावरण मंत्री रामनरेश राय, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रविना दीदी तथा अन्य। मौके पर माननीय प्रदेश सभा सदस्य ज्वाला साह, नेपाली कांग्रेस के नेता शोभाकर पराजुली, कैम्पस प्रमुख राधेश्याम सिवाकोटी तथा अन्य गणमान्य लोगों सहित ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे। इस अवसर पर निर्माणाधीन परिसर में तालाब का शिलान्यास भी हुआ।

दिल्ली-पंजाबी बाग। 85वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती पर आयोजित कार्यक्रम में मंचासीन हैं बायें से मादीपुर विधायक एवं पूर्व मंत्री गिरीश सोनी,दिल्ली सरकार, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. कोकिला बहन तथा मोती नगर विधायक शिवचरण गोयल।

कोरबा-छ.ग.। महाशिवरात्रि के अवसर पर आध्यात्मिक ऊर्जा पार्क,गोरवा घाट में आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित रहे महापौर राजकिशोर प्रसाद, ब्र.कु. हरिहर मुखर्जी,मा.आबू, ब्र.कु. दीपक केबल रमानी, क्षेत्रीय संचालिका ब्र.कु. रुक्मणि दीदी, ब्र.कु. बिन्दु तथा जमनीपाली के डायमण्ड सभागृह में सायंकालीन कार्यक्रम में उपस्थित रहे ब्र.कु. मिश्रा,मुख्य चिकित्सा अधिकारी,चिकित्सालय,एन.टी.पी.सी. जमनीपाली, वार्ड क्रमांक 51 के पार्षद, मनोरमा कुमारी पटेल,इंस्पेक्टर,सी.आई.एस.एफ. दर्री, ब्र.कु. तुलसी, ब्र.कु. राजश्री तथा अन्य गणमान्य लोग।

बाढ़-बिहार। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर बाढ़ उपकारागृह में आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित हैं उपकारागृह अधीक्षक प्रशांत कुमार ओझा, उपाधीक्षक प्रदीप कुमार सिंह, डॉ. स्नेहा, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. ज्योति बहन, ब्र.कु. विपिन तथा अन्य।

बरनाला-पंजाब। महाशिवरात्रि पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान मंचासीन हैं नरिन्दर नीता,म्युनिसिपल काउंसलर, राघवीर जी, पूर्व वाइस प्रेसीडेंट,एम.सी.,बरनाला, डॉ.प्रो. अमित,एस.डी. कॉलेज,बरनाला, हरबंस लाल,समाजसेवी,वरिष्ठ मास्टर जी, ब्र.कु. बृज बहन,स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका तथा ब्र.कु. मूर्ति बहन,धुरी।

बिलासपुर-टिकरापारा(छ.ग.)। रेलवे सुरक्षा बल द्वारा बिलासपुर के नॉर्थ ईस्ट रेलवे इंस्टीट्यूट ऑडिटोरियम में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में स्थानीय ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र की निदेशिका ब्र.कु. मंजू दीदी को सौगात भेंट कर सम्मानित करते हुए दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के महाप्रबंधक गौतम बैनर्जी की धर्मपत्नी श्रीमति इंदिरा बैनर्जी। साथ हैं रेलवे पुलिस के आई.जी. व उनकी धर्मपत्नी तथा अन्य।

कथा सरिता

> जीवन में क्रोध को क्रोध से नहीं जीता जा सकता, बोध से जीता जा सकता है।

प्रेम के दो शब्द

एक देवरानी और जेठानी में किसी बात पर जोरदार बहस हुई और दोनों में बात इतनी बढ़ गई कि दोनों ने एक-दूसरे का मुँह तक न देखने की कसम खा ली और अपने-अपने कमरे में जा कर दरवाजा बंद कर लिया। परन्तु थोड़ी देर बाद जेठानी के कमरे के दरवाजे पर खटखट हुई। जेठानी तनिक ऊँची आवाज़ में बोली कौन है, बाहर से आवाज़ आई दीदी मैं! जेठानी ने जोर से दरवाजा खोला और बोली अभी तो बड़ी कसमें खा कर गई थी। अब यहाँ क्यों आई हो?

देवरानी ने कहा दीदी सोच कर तो वही गई थी, परंतु माँ की कही एक बात याद आ गई कि जब कभी किसी से कुछ कहा-सुनी हो जाए तो उसकी अच्छाईयों को याद करो और मैंने भी वही किया और मुझे आपका दिया हुआ प्यार ही प्यार याद आया और मैं आपके लिए चाय लेकर आ गई। बस फिर क्या था दोनों रोते-रोते एक-दूसरे के गले लग गईं और साथ बैठ कर चाय पीने लगीं।

मैंने क्या दिया...!

एक समय की बात है गौतम बुद्ध किसी उपवन में विश्राम कर रहे थे। तभी बच्चों का एक झुंड आया और पेड़ों पर पत्थर मारकर आम तोड़ने लगे। तभी एक पत्थर बुद्ध के सिर पर लगा और सिर से खून बहने लगा। बुद्ध की आँखों में आंसू आ गये। बच्चों ने देखा तो भयभीत हो गये और उन्हें लगा कि अब बुद्ध उन्हें भला-बुरा कहेंगे। बच्चों ने उनके चरण पकड़ लिए और उनसे क्षमा याचना करने लगे। उनमें से एक बच्चे ने कहा, "हमसे भारी भूल हो गई है, हमारी वजह से आपको पत्थर लगा और आपके आंसू आ गये, हमें माफ कर दें अब हमसे ऐसी गलती नहीं होगी!"

इस पर बुद्ध ने उन्हें समझाते हुए कहा, "बच्चों, मैं इसलिए दुःखी हूँ कि तुमने आम के पेड़ पर पत्थर मारा तो पेड़ ने बदले में तुम्हें मीठे फल दिए, लेकिन मुझे मारने पर मैं तुम्हें सिर्फ भय दे सका।" सच है महापुरुषों का जीवन केवल परमार्थ के लिए ही होता है, खुद को तकलीफ पहुँचने के बावजूद भी वे सिर्फ दूसरों की खुशी के बारे में ही सोचते हैं और ऐसे लोग ही महामानव कहलाते हैं।

शिक्षा : उपर्युक्त कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें भी गौतम बुद्ध की तरह परमार्थ, दूसरों की खुशी के लिए कार्य करने चाहिए। क्रोध में आकर गलत निर्णय लेने से बचना चाहिए।

झोझूकलां-कादमा(हरियाणा)। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर जिला प्रशासन द्वारा कादमा सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. वसुधा बहन एवं ब्र.कु. ज्योति बहन को समाज में महिला सशक्तिकरण,बेटी बचाओ सशक्त बनाओ के साथ अनेक सामाजिक और आध्यात्मिक कार्यों के लिए सम्मानित किया गया। इस अवसर पर उपस्थित रहे जिला उपायुक्त राजेश जोगपाल,आई.ए.एस., महिला एवं बाल विकास अधिकारी गीता साहरण तथा अन्य जिला प्रशासनिक अधिकारी।

चरखी दादरी-हरियाणा। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में कैंडल लाइटिंग करते हुए ब्रह्माकुमारीज़ की जिला संचालिका ब्र.कु. प्रेमलता बहन, भारत विकास परिषद् की बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ अभियान की मुख्य बहन मंजू वत्स, एस.डी.एम. की धर्मपत्नी श्रीमति कविता, नीतू बंसल तथा अन्य।

मुज़फ्फरपुर-बिहार। महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान राजयोगिनी ब्र.कु. रानी दीदी, ब्र.कु. पद्मिनी, ब्र.कु. सीता तथा शहर की गणमान्य महिलायें।

राजकोट-गुज.। अवधपुरी एवं रणछोड़नगर सेवाकेन्द्र द्वारा विश्व महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए नवनियुक्त कॉर्पोरेटर नयना पेढडिया, ग्लोबल इंडियन स्कूल की प्रिन्सीपल विभूति बहन, ब्र.कु. रेखा, ब्र.कु. शीतल तथा अन्य।

बहल-हरियाणा। 85वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती पर ध्वजारोहण करते हुए नायब तहसीलदार सुरेश कौशिक, मार्केट कमेटी के पूर्व चेयरमैन सुशील केडिया, ब्लॉक समिति के पूर्व चेयरमैन साधुराम पनिहार, ब्र.कु. शकुंतला बहन, ब्र.कु. पूनम, ब्र.कु. अशोक तथा डॉ. एन.पी. गौड़।

मोकामा-बिहार। शिव जयंती के अवसर पर सेवाकेन्द्र में आने पर बी.डी.ओ. सह एक्ज़ीक्युटिव ऑफिसर मनोज कुमार को ओम शान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. निशा।

अब छोड़ो व्यर्थ बातें सुनने और दूसरों के दुर्गुण देखने की आदत

- ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

जो बदलना चाहें, उनके लिए कल्याणकारी प्रभु ने अनेक विधियां, युक्तियां अथवा उपाय बताये हैं जिनसे उनकी आत्मा में घुसे हुए संस्कार बाहर निकल जायें और उनका पीछा छोड़ दें। उन सबका तो यहाँ उल्लेख करना सम्भव नहीं है परन्तु एक ऐसी बात को यहाँ हम लिपिबद्ध करना चाहेंगे जो कि किसी अंश में हमारी दृष्टि-वृत्ति को विकृत होने से बचा सकती है। वो यह है कि कई बार हम किसी व्यक्ति से किसी दूसरे की निन्दा सुनकर, चुगली सुनकर, शिकायत सुनकर, अफवाह सुनकर उसे तुरन्त मान जाते हैं और यह सोचने लगते हैं, "अच्छा, वो व्यक्ति ऐसा निकृष्ट है! हमने तो उसके विषय में कभी ऐसा सोचा ही नहीं था"। हम उस बात की जांच नहीं करते बल्कि यह देखकर कि कहने वाला व्यक्ति हमारा घनिष्ठ मित्र है, विश्वास पात्र है, हमारे निकटतम है, हम उस बात को दूसरे व्यक्ति की उनुपस्थिति में मान जाते हैं। गोया हम उसकी पीठ में छूरी घोंपते हैं। चाहे वो व्यक्ति निर्दोष ही हो, हम दूसरे के कहने में आकर मन ही मन उससे घृणा करने लगते हैं। जिसे हम अच्छा समझते थे, उसे अब घटिया मानने लगते हैं और कई बार तो दूसरों को कहने लगते हैं कि "अरे, तुम्हें मालूम है कि उस व्यक्ति का तो फलां से लगाव-झुकाव है, वो झूठा है, ठग है, बेईमान है, वो केवल बाहर का दिखावा दिखाता है और वाचाल(बोलने में होशियार) है, बाकी उसमें ज्ञान-ध्यान कुछ नहीं है। तुम आगे के लिए उससे बोलना छोड़ दो; उसका संग खराब है। मनुष्य कमर के साथ भारी पत्थर बांधकर पानी में उतरेगा तो डूबेगा ही। उसके संग वाले का भी ऐसा ही परिणाम होगा। सुना, तुम बचकर रहना।" जब ऐसी दृष्टि-वृत्ति हो जाये तो मनुष्य की अपनी बुद्धि मारी जाती है क्योंकि वो स्वयं अपनी बुद्धि में

कंकड़-पत्थर इकट्ठे करने लगता है गोया अपनी ही डूबने की तैयारी करने लगता है। अपने को ज़िन्दा जलाने के लिए अपनी चिता की लकड़ियां स्वयं चुनकर लाता है और उनकी सेज बनाता है। अपनी हत्या के लिए अग्नि स्वयं अपने हाथ से जगाता है। उसे किसी करनीघोर ब्राह्मण की आवश्यकता ही नहीं। श्मशान पर जलाने की रस्म करने वाले जो पंडित होते हैं, उनकी भी उसे आवश्यकता नहीं। वो बिना मंत्र और रस्म के मर जाता है। किसी को उसका जनाजा उठाने की ज़रूरत नहीं क्योंकि वह तो अपने आप ही चिता पर लेट जाता है। हाय-हाय, हम अपने जीवन से यह क्या करते हैं! जैसे कोई चन्दन को जलाकर कोयला बना ले, वैसे ही हम अपने जीवन को भस्म कर देते हैं। अब छोड़ो दुश्मनी को, उसके लिए छोड़ो नफरत को, नफरत को छोड़ने के लिए छोड़ो दूसरों की व्यर्थ बातें सुनने को और दूसरों के दुर्गुण देखने की आदत को। अगर यह एक बात भी हम पक्की कर लें तो भी हम उस रास्ते पर चल पड़ेंगे और खुशी, आनन्द तथा मित्रभाव के झूले में झूलते रहेंगे। दृष्टि और वृत्ति को न बदला तो कृति नहीं बदलेगी। अगर कृति न बदली तो विकर्मों का बोझ बढ़ता जायेगा और पाप का घड़ा भरता जायेगा तथा जीवन दलदल में धंसता जायेगा। स्मृति-भ्रंश हो जायेगी और जिसकी स्मृति ही भ्रंश हो जाये, तो गीता के महावाक्य हैं कि उसकी केवल लुटिया ही नहीं डूबती, उसका तो सर्वनाश हो जाता है।

! यह जीवन है !

हर इंसान अपनी एक सांसारिक इमेज के एहसास के साथ कर्म व्यवहार करता है, अर्थात् स्त्री-पुरुष, पद-पोजिशन, नाम-मान-शान, और जब तक हम इस भान में रह कर व्यवहार में आएंगे, निश्चित है कि हम एक घुटन या बंधन में ही जीवन व्यतीत कर देंगे, और अहंकार की झलक सदा छलकाते रहेंगे।

इस अहंकार के एहसास से हम खुद भी अनभिज्ञ रहेंगे, अतः अगर हमें सच्ची स्वतंत्रता का अनुभव सदा करते रहना है, तो हमें खुद को इस पृथ्वी रूपी रंग मंच पर एक अनिश्चित कालीन पार्टधारी, उस ईश्वर के द्वारा भेजा गया एक इंसान(कलाकार) मात्र समझ कर कर्म व्यवहार में आना होगा।

बस एक एक्सपेरिमेंट करके देखिए

ब्र.कु. शिवानी, जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

कई बार क्या होता है हमारे जीवन में बहुत-सी ऐसी चीज़ें होती हैं जो हमें आगे बढ़ने से रोकती हैं। हमारा एनर्जी लेवल नीचे ले आती हैं। तो क्या होता है हमारी अंगुली जल्दी ही बाहर किसी पर चली जाती है। लेकिन हमें क्या करना चाहिए? हमें पहले अपनी चेकिंग करनी चाहिए कि कौन-सी इमोशन है जो मेरे एनर्जी फील्ड को थोड़ा-सा नीचे ले आती है। और कौन-सी फीलिंग्स हैं जो मेरे एनर्जी लेवल को ऊपर लेकर जायेगी। फियर(डर), अगर हमें किसी बात का फियर होगा तो वो हमारे एनर्जी लेवल को नीचे ले आयेगा। लेकिन जब हमारे कर्म सही होंगे,ये अपने ऊपर विश्वास रखना है कि मेरा कर्म सही है। हर रोज़ अपने आपको एक ब्लेसिंग(आशीर्वाद) देनी है, मेरा हर कर्म सही है। मेरी इंटेंशन प्योर है। मेरे साथ कभी कुछ गलत हो ही नहीं सकता। ये थोड़े दिन के लिए रोज़ बोलिएगा।

कई बार जब हम ऐसे प्रोग्राम्स में बैठे होते हैं तो किसी का फोन बज जाता है। फोन साइलेंट करना तो बहुत इज़ी है ना! लेकिन मैंने देखा है कि वो नर्वस हो जाते हैं। उनको पता ही नहीं चल रहा होता कि फोन को साइलेंट कैसे करना है। फिर हम दूसरों को देते हैं कि फोन साइलेंट कर दीजिए मुझसे हो नहीं रहा, क्यों? क्योंकि उस वक्त अन्दर में एक डर पैदा हो जाता है। जो सिम्पल चीज़ को भी मुश्किल कर देता है।

फियर, हीलर के एनर्जी फील्ड में हो ही नहीं सकता। फियर की बजाय क्या होना चाहिए, फेथ(विश्वास)। पहले हमें खुद में विश्वास होना चाहिए। सेकंड, फेथ रखिए सामने वाले के अन्दर कि जब मैं आपको अपनी 100प्रतिशत प्योरिटी दे रही हूँ, आपके यहाँ से भी प्योरिटी ही आनी है। फिर भी अगर लॉजिकल माइंड(तर्क संगत दिमाग) कहे कि कभी न कभी, कोई न कोई तो कुछ ऐसा कर ही देता है। उस दिन अपने आपसे कहना कि मैंने हमेशा से सही कर्म किए हैं, और लाखों की दुआएं कमाई हैं। कोई छोटा-मोटा विघ्न आ भी गया तो ऐसे ही खत्म हो जायेगा। जो दुआएं कमाते हैं ना उनके जीवन में कोई विघ्न आ भी गया किसी दिन तो इतना दुआओं का स्टॉक कब काम आने वाला है! लेकिन डर क्रियेट करके खुद अपने ऊपर भी डाउट करते हैं और सामने वाले पर भी डाउट करते हैं। तो हमें उस फियर को फेथ में रिप्लेस कर देना है। ऐसे हर रोज़ राइट थॉट क्रियेट करके, क्या थॉट क्रियेट करने हैं- मेरा हर कर्म सही है, मेरी इंटेंशन प्योरेस्ट है। मेरे साथ कभी कुछ गलत हो ही नहीं सकता।

एक चीज़ याद रखनी है, लॉ ऑफ एनर्जी(ऊर्जा का नियम)। जो हम सोचेंगे, जो गाड़ी फास्ट चलाते हैं उनके इतने एक्सीडेंट नहीं होते, लेकिन जो सोचते हैं कि मेरा एक्सीडेंट न हो जाये उनके ज़्यादा एक्सीडेंट होते हैं। क्योंकि हम ऐसे वायब्रेशन छोड़ते हैं हो न जाये, हो न जाये, हो न जाये। सिम्पल, एक दिन एक्सपेरिमेंट करके देखें, मान लिजिए आप किसी पार्टी में जा रहे हैं पर जाने से पहले आपकी ड्रेस पर कोई दाग लग जाये, और बार-बार उसके बारे में सोचते रहें कि अरे दाग लग गया, दाग लग गया, और इसी सोच के साथ पार्टी में जायेंगे कि मेरा दाग कोई न देख ले। फिर उसको छिपाते रहेंगे कि दाग दिख न जाये। फिर कोई देखता है ऐसे करते हुए तो कोई पूछ लेता कि क्या हुआ, कुछ गिरा? तो यहाँ क्या हुआ? हमने फियर क्रियेट किया, और दूसरों ने कैच कर लिया।

हम फेथ क्रियेट करेंगे तो फेथ कैच करेंगे। यह मेरी च्वाइस है कि सामने वाले को क्या भेजना है, फेथ या फियर। जब एनर्जी प्योर होगी तो अगर सामने वाले के साथ कभी कुछ गलत हो भी जाता है ना, तो सामने वाला कहेगा कि डॉक्टर साहब मुझे पता है कि आपने अपना बेस्ट किया था। मेरा भाग्य था ये, ये क्या है विश्वास। तो उसको भी आपके अन्दर विश्वास आयेगा कि आपने अपना बेस्ट दिया था, आपने जानबूझकर कोई गलती नहीं की थी, ये विश्वास कैसे आयेगा उसके अन्दर, जब हमारे यहाँ से वायब्रेशन जायेगा कि मेरा हर कर्म सही है। मेरी इंटेंशन प्योरेस्ट है। तो इसीलिए मुझे अपने विचारों पर और वायब्रेशन्स पर ध्यान देना है।

जयपुर-सोडाला। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए डॉ. सुशीला सैनी, डॉ. शशि शर्मा, माधुरी शर्मा,जिला अध्यक्ष,मानव अधिकार रक्षा संगठन,जयपुर, ब्र.कु. राखी बहन, ब्र.कु. स्नेह दीदी तथा रेखा राठौर,पार्षद एवं जयपुर जिला मंत्री।

महू-म.प्र.। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए डॉ. शोभा जैन,प्रभारी प्राचार्य महू कॉलेज एवं अध्यक्ष इनर व्हील क्लब महू, डॉ. वंदना जायसवाल,प्रोफेसर,आर्ट्स एंड कॉमर्स कॉलेज महू, गीता लखवानी,एडवोकेट एवं समाजसेवी, निर्मला यादव,अध्यक्ष,वामा क्लब महू, ब्र.कु. प्रीति,धामनोद सेवाकेन्द्र संचालिका, ब्र.कु. पुनीता,स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका तथा ब्र.कु. जया।

मुम्बई-मलाड। नेशनल ह्युमन राइट्स एंड सोशल जस्टिस कमीशन द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित कर राजयोगिनी ब्र.कु. कुंती दीदी,स्थानीय संचालिका,ब्रह्माकुमारीज़ को 'महिला समाज रत्न सम्मान 2021' अवॉर्ड से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर उपस्थित रहे डॉ. मेहताब राय,एन.एच.आर.जे.एस.सी. नेशनल प्रेसीडेंट, एम.आई. पटेल,सेंट्रल एडवाइज़र दिल्ली, श्रीमति मंजू गौतम,इंटरनेशनल फिल्म प्रोड्यूसर, डॉ.अर्चना देशमुख,सोशल वर्कर, श्रीमति पवन पेठे,पुलिस इंस्पेक्टर,स्पेशल ब्रांच सी.आई.डी. तथा अन्य।

OM-2- 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 25/03/2021 6:18 PM Page 10

इतना शक्तिशाली व्यक्तित्व जिसने भगवान को सम्भाला

इतना शक्तिशाली व्यक्तित्व जिसने भगवान को सम्भाला, उसको अपने दिल में उतारा। हमारी अति आदरणीय, मीठी फरिश्ता स्वरूप, हृदय को मोहने वाली, सहनशीलता की मूर्ति, दिव्यता की खान, दादी जी के बारे में जितना कुछ कहा जाये उतना कम है। वो दिलाराम की दिलरूबा है। सच में परमात्मा का रथ बनना दुनिया का सबसे बड़ा भाग्य माना जायेगा। इन्होंने समाज के उस गरिमामयी स्थिति को प्राप्त किया, जिसको इतनी तपस्या के बाद ऋषि-मुनि भी प्राप्त नहीं कर सकते।

मात्र 8 वर्ष की आयु में जब इस ब्रह्माकुमारीज़ के सम्पर्क में आये और धीरे-धीरे इस ज्ञान की गहराई को समझा और पूरी तरह से इस संस्था के साथ जुड़ीं और यहाँ की गतिविधियों को आगे बढ़ाया, लेकिन साथ-साथ सही मायने में बात को समझाने के लिए वो भी परमात्मा की बात एज़ इट इज़ समझाने के लिए वह निमित्त बनीं और सभी के लिए एक प्रेरणा स्रोत भी बनीं। कहा जाता है कि परमात्मा इतना आसानी से तो किसी को नहीं चुनेगा अपने लिए, निश्चित रूप से उस आत्मा के अन्दर बहुत बल होगा। बहुत ताकत होगी। आने वाली दुनिया में निश्चित रूप से सबकुछ बदलेगा। वो तो ये कहेंगे कि ये तो भविष्य की जीवन्त कल्पना है, लेकिन सच में ये होने ही वाला है। उसका स्वरूप अगर किसी ने देखा तो वो हैं हमारी दादी जी। कहा जाता है कि गीता श्री कृष्ण ने सुनाई। लेकिन एक छोटा बच्चा जो इतना आकर्षक है और वो ज्ञान की चर्चा करेगा, कोई ऐसी अच्छी-अच्छी बातें करेगा तो आपको उसकी बातें मन मोहक लगेंगी और आप बड़े ही भाव से, बड़े ही प्यार से उसको सुनेंगे कि बच्चा तो बहुत अच्छी-अच्छी बातें कर रहा है। बड़ी-बड़ी बातें कर रहा है, लेकिन उन बातों को फॉलो करना आसान नहीं है। इसी तरह से जब कोई बुजुर्ग कोई बात कहता है जिसने

उस चीज़ को धारण किया, इतने साल का अनुभव है उसके साथ, तो उस अनुभव को, उस बात को सुन कर उस बात को निश्चित रूप से उसे करने का मन करेगा। उन्होंने इतने समय से तपस्या करके इस बात को अपने अन्दर धारण किया, तो सहज रीति से, सहज भाव से इन आत्माओं ने इस ज्ञान को अपने अन्दर रचा, बसा लिया और कहने में इस बात को बिल्कुल भी अन्दर से हिचक नहीं है, बेहिचक, बेझिझक इस बात को आपके सामने रखा जा सकता है कि सचमुच में अगर सम्पूर्ण पवित्रता की मूर्ति अगर देखना है तो हमारी सभी दादियां तो निश्चित रूप से हैं ही लेकिन विशेष रूप से दादी हृदयमोहिनी(दादी गुल्ज़ार) एक फरिश्ता, एक उड़ता हुआ फरिश्ता कह सकते हैं जिसने अपने आपको सबके सामने निर्संकल्प अवस्था में रखा। निर्संकल्प अवस्था इस तरह से कह सकते हैं कि जो निरन्तर परमात्मा की याद में रहता है उसके व्यर्थ की सोच, व्यर्थ की बातें बंद हो जाती हैं। वो हमेशा कुछ अलग सोचता है, कुछ अलग करता है, कुछ अलग तरीके करवाता भी है तो ऐसी धैर्यता, नम्रता और पवित्रता की मूर्ति सरलता मधुरता और दिव्यता की मूर्ति हमारी अथक और हर्षितमुख दादी गुल्ज़ार जी ने बहुत सालों तक बहुत ही अच्छी पालना दी।

हम सबका जो इस ब्रह्माकुमारीज़ में आने का जीवन है चाहे वो किसी का दस साल का है, पंद्रह साल का है जो दादी से मिले या जो नहीं भी मिले लेकिन अव्यक्तमूर्त मात-पिता जो हमारे परमपिता परमात्मा शिव बाबा हैं उनके महावाक्यों को आज भी वीडियो के माध्यम से या ऑडियो के माध्यम से सुनते हैं, तो लगता है कि इस रथ के अन्दर कितनी पावनता होगी जो परमात्मा ने उसे चुना, और हम सबके समक्ष रखा। समाज की एक-एक छोटी इकाई को भले दादी जी ने नहीं देखा हो, समाज में इतने नहीं रहे हों जैसे दुनिया में लोग रहते हैं, लेकिन जब ये ज्ञान सुनाते थे तो लगता नहीं था कि उन्होंने कभी उस दुनिया को देखा नहीं हो। उस दुनिया को भी देखा और उस दुनिया में रहने

ब्र.कु.अनुज,दिल्ली

वाले लोगों को भी अनुभव किया, लेकिन सूक्ष्मता के साथ और वही सूक्ष्मता की गहराई हम सबके समक्ष वे रखती थीं और एक बात सदा कहती थीं कि सोचो आपके दिल में कचरा हो और उसमें आप किसी को बिठाना चाहो तो क्या कोई बैठेगा? उसी प्रकार वो कहती थीं कि अगर हमारा मन गंदा है तो उसमें परमात्मा कैसे बैठेगा! ऊपर से कोई कचरा डाल दे, कैसा लगेगा! तो दिल और मन जब साफ होगा तब परमात्मा भी हमारे साथ होगा। ये दादी निरन्तर हम लोगों से क्लासेस में कहती थीं। और अभी भी उनकी जितनी भी बातें हैं वो कहानियां और कहावतें नहीं बनेंगी, निश्चित रूप से उसका स्मारक स्थल और ऐसी चीज़ें बनाकें भी हम अगर चाहें तो श्रद्धाजंलि देना तो उनको नहीं दे सकते। उनकी हर एक बात धारणा करने की है। उनकी हर एक बात में उनका अपना व्यवहार, अपनी दिव्यता झलकती है, तो आने वाला समय निरन्तर दादी जी को निर्संकल्प अवस्था और अंतमुर्खता के लिए बहुत अच्छी तरह से याद करेगा और आज भी पूरा ब्राह्मण परिवार जो ब्रह्माकुमारीज़ को फॉलो करने वाले बाबा के बच्चे हैं वो सभी भी श्रद्धा सुमन इसी हिसाब से दादी जी को अर्पण कर रहे हैं। तो ऐसे दादी को हम सबका दिल से शत-शत नमन।

उपलब्ध पुस्तकें
जो आपके जीवन को बदल दें

प्रश्न : मेरा नाम तुलाराम है। मैं किसी भी कार्य में दृढ़ नहीं रह पाता, तो अपने किसी भी कार्य में दृढ़ता लाने के लिए क्या करना चाहिए?

उत्तर : कई मनुष्य बचपन से ही थोड़ा सुस्त होते हैं। लेकिन हरेक मनुष्य को ये आदत डाल लेनी चाहिए कि आज का काम आज की कर लेना है। अपनी दिनचर्या को, अपने कार्य को अच्छे से मैनेज कर लेना चाहिए। इसमें सबसे पहले तो मनुष्य को अपने संकल्पों में चेंज लाना चाहिए। इसमें अच्छे स्वमान की प्रैक्टिस की ज़रूरत है ताकि उसमें बोल्डनेस आये। जैसे मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, मैं बहुत महान हूँ, मुझे बड़े-बड़े कार्य करने हैं। पढ़ाई में ये हमेशा लक्ष्य रखें कि अगर मार्क्स 60 प्रतिशत आते हैं तो मुझे 70 प्रतिशत लाने हैं, तो एक अच्छा लक्ष्य बना लेने से जीवन का, ये दृढ़ता आती रहेगी। और ये निश्चितता लायें कि मुझे आज इतने समय में ये कार्य पूर्ण करना ही है। इससे स्पीड बढ़ेगी और संकल्प एकाग्र होंगे उस कार्य के लिए। इसलिए स्वमान का अच्छे से अभ्यास करें। इसकी प्रैक्टिस रोज़ करेंगे तो दृढ़ता आने लगेगी।

प्रश्न : मेरा नाम अंकित है। जिस किसी को भी देखें मन-बुद्धि उसकी तरफ न जाये उनसे रिलेटेड पास्ट के थॉट न आयें, उसके लिए हम क्या करें? क्योंकि पास्ट में हुई बातें जब याद आती हैं तो बाबा भूल जाता है।

उत्तर : निःसन्देह इससे बचना परमआवश्यक है। वरना हमारी मानसिकता जो है वो निगेटिव होने लगेगी। और हमें पास्ट में रहने की आदत ही पड़ जायेगी। और हम न तो अपने वर्तमान को अच्छा बना सकेंगे और न भविष्य को सुन्दर बना सकेंगे। इसलिए शिव बाबा ने अपना ज्ञान देते हुए बहुत समझाया कि पास्ट इज़ पास्ट। फुल स्टॉप लगा दो। अब तुम भी अज्ञान में थे। वो भी अज्ञान में था। तुम भी किसी विकार के वश थे और वो भी किसी विकार के वश था। विकारों के वश दोनों से कुछ गलतियां हुई हैं व्यवहारिक। अब ज्ञानी बन गए। अब तुम्हारा कर्त्तव्य है सबको आत्मिक दृष्टि से देखना। सभी आत्मायें हैं, चमक रही हैं। सभी बहुत अच्छे हैं। इस फीलिंग से देखेंगे ना तो इसे कहते हैं वृत्ति का निर्माण करना। हमारी फीलिंग्स जो दूसरों के लिए हैं, हमारा एटीट्यूड जो दूसरों के लिए है उसको वृत्ति कहते हैं। पास्ट में जो भी हुआ पास्ट इज़ पास्ट। पास्ट में इन्होंने मेरे साथ जो भी बुरा किया हो लेकिन मुझे इनके साथ अच्छा करना है। तो इस तरह के चिंतन से पास्ट विस्मृत होता जायेगा।

प्रश्न : मैं एक कुमार हूँ। मुझे जल्दी ही तनाव आ जाता है। मुझे अब ज्ञान लेने के बाद यह स्थिति अच्छी नहीं लगती। मैं खुशनुमा जीवन जीना चाहता हूँ। कृपया सहज उपाय बताएं?

उत्तर : छोटी-छोटी बातों में तनाव होना - यह कमज़ोर मन की निशानी है। आप योगाभ्यास कर स्वयं को पावरफुल बनायें। हर बात को सहज रूप से लें। जीवन में हमें उन बातों को स्वीकार कर लेना चाहिए, जिन्हें हम बदल नहीं सकते। उन्हें स्वीकार करके चित्त को शांत करें।

हर बात में तुरंत रियेक्ट(प्रतिक्रिया) न करें। आपको थोड़ा-सा धैर्य चित्त बनने की आवश्यकता है। अब आपने ज्ञान लिया है स्वयं में ज्ञान का बल भरें। ज्ञान सुनना एक बात है और स्वयं में ज्ञान का बल भरना महत्वपूर्ण बात है। ज्ञान का बल ज्ञान चिंतन से आता है और ज्ञान चिन्तन होता है ज्ञान सिमरण से। एक बात पक्की कर दें कि दूसरे लोग वैसा ही नहीं करेंगे, जैसा हम चाहते हैं।

प्रश्न : मैं अधरकुमार हूँ। मुझे पवित्र बनने की बहुत इच्छा है परन्तु माया बनने नहीं देती। मेरा योग भी नहीं लगता। कृपया विधि बतायें।

उत्तर : जन्म-जन्म की वासनाएं, अब मनुष्य को पवित्र बनने नहीं देती। भगवान को तो पवित्रता ही प्रिय है। उनकी आज्ञा है, काम महाशत्रु है। गीता में भी महावाक्य हैं - जो मनुष्य काम व क्रोध के वेग को सहन करने में समर्थ हैं, वही सच्चा योगी है। आपको योगी भी बनना है व पवित्र भी। दोनों का गहरा नाता है। बिना पवित्रता के कोई योगी बन नहीं सकता व बिना श्रेष्ठ योग के सम्पूर्ण पवित्रता का बल प्राप्त नहीं होता। आपको क्या करना है सारे दिन में पच्चीस बार याद करना है- मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, मैं महान आत्मा हूँ। सवेरे उठते ही दस बार याद करना है मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, मायाजीत हूँ, विजयी रत्न हूँ।

सारे दिन में दस बार एक-एक मिनट स्वयं को देह से न्यारा आत्मा समझना अर्थात् अशरीरीपन का अभ्यास करना है। भोजन खाते व पानी-दूध पीते उसे दृष्टि देकर सात बार संकल्प करना है कि मैं परम पवित्र आत्मा हूँ। भोजन बीस प्रतिशत कम कर दीजिए। बस इस तरह शीघ्र ही आपमें पवित्रता धारण करने की शक्ति आ जाएगी।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

मन की ख़ुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड' और 'अवेकनिंग' चैनल

अनानास के फायदे हैं बहुत... पर लें सावधानी से

अनानास सुनहरे रंग का दिखने वाला एक बहुत ही स्वादिष्ट-सा फल है। परंतु क्या आप इस बात से परिचित हैं कि सुनहरे रंग का यह फल आपके सेहत के लिए भी सुनहरा है। जी हाँ, अनानास में न केवल खट्टे-मीठे स्वाद का खजाना समाया हुआ है अपितु साथ ही में यह स्वास्थ्य लाभ के लिए गुणों का भी भण्डार है।
यह फल एंटीऑक्सिडेंट, फाइबर, विटामिन ए और विटामिन सी, थायमिन, कैल्शियम, पोटैशियम, फास्फोरस, मैंगनीज के साथ-साथ फोलेट से भी भरपूर है। इसके अतिरिक्त, यह सोडियम और वसा में भी कम है।

अनानास के फायदे

पाचन शक्ति को करे उत्तेजित

अनानास पाचन प्रक्रिया के लिए उत्तम माना जाता है। यह पाचन शक्ति को उत्तेजित तो करता ही है परंतु साथ ही में यह पेट एवं आंत की अंदरूनी सतह को भी शांत करने में उपयोगी है। यह घुलनशील एवं अघुलनशील दोनों ही तरह के फाइबर से भरपूर है। जो पाचन प्रक्रिया एवं मल त्याग क्रिया में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करते हैं। इसके अलावा, इसमें ब्रोमेलैन नामक एक तत्व पाया जाता है जो प्रोटीन के पाचन में सहायक है। यह कब्ज की समस्या का भी एक सफल समाधान है।

इम्युनिटी को बढ़ावा देने के लिए

अनानास विटामिन सी का एक बहुमूल्य भण्डार है और विटामिन सी इम्यून सिस्टम की कार्यशीलता के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण पोषक तत्व है। यह शरीर के विभिन्न प्रकार के वायरस से रक्षा करता है और जुकाम, फ्लू, कान में संक्रमण और आदि संक्रामक बीमारियों के खिलाफ शरीर के प्रतिरोध प्रक्रिया को बढ़ावा देता है। विटामिन सी एक एंटी ऑक्सीडेंट के रूप में भी कार्य करता है जो शरीर को फ्री-रेडिकल क्षति से बचाता है। शरीर में फ्री रेडिकल के संचय से प्लाक उत्पादन होता है जो हृदय सम्बन्धित बीमारियों का एक प्रमुख कारण है।

अनानास दिलाए मॉर्निंग सिकनेस से छुटकारा

इस फील्ड से सम्बन्धित अध्ययनों में यह पाया गया है कि सुबह-सुबह अनानास खाने से मॉर्निंग सिकनेस से होने वाली मतली एवं उल्टी को कम किया जा सकता है। और मॉर्निंग सिकनेस को अनानास के जूस का सेवन करने से ठीक किया जा सकता है। क्योंकि इसमें उच्च मात्रा में खनिज व विटामिन्स सम्मलित हैं, खासतौर पर विटामिन बी 6।

सूजन को करे कम

अनानास में ब्रोमेलैन नामक एक तत्व पाया जाता है जो एक प्राकृतिक एंटी इंफ्लेमेटरी एजेंट के रूप में कार्य करता है और आपके शरीर को जलन व सूजन से छुटकारा दिलाता है। यह मोच, मांसपेशियों में मामूली खींचाव एवं चोट से जुड़ी सूजन को कम करने में मदद करता है। साथ ही यह गाउट(वात रोग) और गठिया से सम्बन्धित दर्द व सूजन को शांत करने में भी सहायक है।

स्वास्थ्य

वजन घटाने में भी सहायक

वजन घटाने वाले आहार में अनानास सर्वोत्तम फलों में से एक है। यह आपके पेट को भरा रखता है जिससे आप अत्यधिक भोजन ग्रहण करने से बच जाते हैं और आपके शरीर में ऊर्जा की कमी भी नहीं होती। और ऊपर से इसमें कैलोरीज भी बहुत कम होती है। इसमें पानी एवं फाइबर की मात्रा भी उच्च है जो आपको लंबे समय तक भरा-भरा रखती है।

हड्डियों के स्वास्थ्य हेतु उपयोग

अनानास खनिज मैंगनीज का एक अच्छा स्रोत है जो हड्डियों के स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है। वास्तव में, शरीर में मैंगनीज का निम्न स्तर हड्डियों की विकृति और हड्डियों के नुकसान से जुड़ा हुआ है जो कम अस्थि घनत्व और ऑस्टियोपोरोसिस के लिए अग्रणी है।
मैंगनीज फ्री रेडिकल क्षति से कोशिकाओं को बचाता है। जिससे वृद्धावस्था की प्रक्रिया धीमी हो जाती है। ताजा अनानास का एक कप आपके शरीर को मैंगनीज की दैनिक आवश्यकता का 75प्रतिशत प्रदान करता है।

बनाए त्वचा को चमकदार

अनानास अपनी समृद्ध विटामिन सी सामग्री की वजह से साफ और चमकदार त्वचा को बनाए रखने के लिए उत्कृष्ट है जो क्षतिग्रस्त उत्तकों की मरम्मत में मदद करता है। और त्वचा की चमक को बढ़ावा देता है। साथ ही इसके एंजाइम त्वचा की लचक को बढ़ाते हैं और त्वचा की मृत कोशिकाओं के उन्मूलन को बढ़ावा देते हैं।

अनानास के नुकसान

यह तो प्रकृति का नियम है, यदि किसी चीज़ के सेवन से सेहत लाभ पहुंचता है तो उसी का अधिक सेवन करने से शरीर में हानि भी पहुंच सकती है।
अनानास में प्राकृतिक शर्करा बहुत ही उच्च मात्रा में पाई जाती है जिससे शुगर रोगियों के ब्लड शुगर स्तर में बढ़ोतरी हो सकती है।
अनानास फल प्राकृतिक रूप से अम्लीय स्वभाव का है जिसके अधिक सेवन से दंतवल्क(एनामेल) नरम हो जाती है और आपके दांत सड़ सकते हैं। इसलिए सुनिश्चित करें कि अनानास खाने के बाद या अनानास के रस को पीने के बाद आप पानी से अच्छी तरह से कुल्ला करें।
बहुत अधिक मात्रा में अनानास का उपभोग करने से आपके होंठ, भीतरी गाल और जीभ में सूजन हो सकती है। हालांकि यह सूजन कुछ ही घंटों के भीतर स्वयं ही ठीक हो जाती है। परंतु यदि आपको रैशेस भी हो रही हों तो तुरंत एक अच्छे डॉक्टर से संपर्क अवश्य करें।
अनानास में बहुत ही उच्च मात्रा में विटामिन सी पाया जाता है जिसके अधिक सेवन से आपको दस्त,उल्टी, पेट में दर्द, सिर में दर्द, अत्यधिक माहवारी रक्तस्राव आदि परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है।
अनानास के अत्यधिक सेवन से आपको संधि शोध(गठिया)भी हो सकता है। इसके अलावा इसका अधिक सेवन गले व किडनी सम्बन्धित विकारों का भी कारण बन सकता है।

निम्नलिखित बातों का रखें ध्यान

संभवत आपको अनानास से एलर्जी हो सकती है इसलिए जब आप इसका सेवन पहली बार करें तो कम मात्रा में ही करें और एलर्जी के लक्षण दिखने पर तुरंत डॉक्टर से सलाह लें।
अनानास का सेवन कभी भी एंटीबायोटिक दवाइयों के साथ नहीं करना चाहिए। उसके साथ सेवन करने से आपको सीने मे दर्द, खांसी-बुखार, सिर घूमना आदि लक्षणों का सामना करना पड़ सकता है।
इसका सेवन ब्लड थिनर(रक्त पतला करने के लिए दवाई) के साथ भी नहीं करना चाहिए। इससे ब्लीडिंग का खतरा बढ़ सकता है।
सर्जरी से एक दिन पहले और 15 दिन बाद तक अनानास एवं उसके जूस का सेवन नहीं करना चाहिए।
यदि आप शरीर में फाइबर की कमी पूरी करने के लिए अनानास का सेवन करना चाहते हैं तो इसे साबुत ही खाएं, इसके जूस में फाइबर की उतनी मात्रा नहीं होती है।
कच्चे अनानास का जूस या फिर उसका सेवन करना आपके सेहत के लिए अत्यंत हानिकारक साबित हो सकता है।

रतलाम-म.प्र.। महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' अभियान के अंतर्गत धर्मगुरुओं के सम्मेलन में ब्रह्माकुमारीज़ को आमंत्रित किये जाने पर ब्र.कु. मनोरमा बहन को सम्मानित करते हुए बाल विकास अधिकारी विनीता लोढ़ा, ग्रामीण क्षेत्र विधायक दिलीप मकवाना तथा महिला एवं बाल विकास विभाग की सहायक संचालिका अंकिता पंड्या।

ठाकुरगंज-बिहार। महाशिवरात्रि महोत्सव में शिव ध्वजारोहण करते हुए प्रखण्ड विकास पदाधिकारी श्रीराम पासवान, पूर्व विधायक गोपाल धानुका की धर्मपत्नी लता धानुका, ब्र.कु. शारदा बहन तथा अन्य।

मोतिहारी-बिहार। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर भाजपा द्वारा आयोजित 'महिला सशक्तिकरण समारोह' में समाज में नैतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना के लिए तत्पर रहने एवं आध्यात्मिक क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्यों के लिए ब्र.कु. पूनम, ब्र.कु. अलका श्रीवास्तव तथा मेडिकल विंग की ब्र.कु. डॉ. अंजू वर्मा को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में उपस्थित रहे कानून एवं गन्ना मंत्री प्रमोद कुमार।

टूंडला-रामनगर। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित हैं गायत्री परिवार की सदस्य बहन कल्पना जी, बहन मीना जी, ब्र.कु. विजय बहन, ब्र.कु. तनु, ब्र.कु. पूजा, ब्र.कु. रेणु तथा अन्य महिलायें।

भुवनेश्वर-बी.जे.बी. नगर(ओडिशा)। श्री लिंगराज मंदिर में महाशिवरात्रि के अवसर पर आयोजित भजन समारोह में राजयोगिनी ब्र.कु. तपस्विनी बहन ने 'शिव जयंती रहस्य' विषय पर सम्बोधित किया। उपस्थित हैं ब्र.कु. अपर्णा तथा अन्य।

नीमच-म.प्र.। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर हेल्पिंग हैण्ड्स सोशल वेलफेयर सोसायटी द्वारा महिलाओं के लिए आयोजित 'रन फॉर फिट' मैराथन दौड़ के समापन पर ब्रह्माकुमारीज़ की उपक्षेत्रीय संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. सविता दीदी को 'हेल्पिंग हैण्ड्स' की ओर से प्रशस्ति पत्र एवं ट्रॉफी भेंट कर सम्मानित करते हुए पूर्व नगर पालिका अध्यक्षा श्रीमति नीता दुआ तथा अपर जिला सत्र न्यायाधीश की धर्मपत्नी श्रीमति सपना जैन। इस अवसर पर सी.आर.पी.एफ. के अधिकारीगण, न्यायाधीशगण एवं अन्य गणमान्य नागरिक बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

समाज में हो समरसता एवं सुख, शांति, समृद्धि की अभिवृद्धि

वाराणसी-श्रीरामनगर कॉलोनी(उ.प्र.)। मेरा परम सौभाग्य है कि मैं आज शिवरात्रि के पावन पर्व पर भगवान के इस घर में भगवत श्रद्धा के नये स्वरूप का दर्शन कर रहा हूँ। इस अवसर पर बाबा विश्वनाथ से कामना करता हूँ कि समाज में समरसता एवं सुख, शान्ति, समृद्धि की अभिवृद्धि हो। उक्त विचार प्रदेश के कैबिनेट मंत्री अनिल राजभर ने महाशिवरात्रि के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि संस्था की निःस्वार्थ मानवीय सेवाएं विश्व के लिए अनुकरणीय है। सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सरोज दीदी ने कहा कि महाशिवरात्रि परमात्मा शिव के अवतरण दिवस की यादगार है। हम कामना करते हैं कि आज के दिन सभी श्रद्धालुजन अपने अंदर व्याप्त मानसिक बुराइयों, विकृतियों एवं व्यसनों का सदा सर्वदा के लिए त्याग कर सच्ची शिवरात्रि का आजीवन व्रत रखेंगे। क्योंकि इन्हीं बुराइयों के आजीवन त्याग से ही परमात्मा शिव प्रसन्न होते हैं और मानव का जीवन दिव्य एवं सुखदाई बनता है। वरिष्ठ समाजसेवी ब्र.कु. ओ. एन. उपाध्याय तथा संस्था की सह-शाखा प्रभारी ब्र.कु. चन्दा बहन ने शुभकामनायें देते हुए सभी का स्वागत किया। तत्पश्चात् सभी ने मिलकर शिव ध्वजारोहण किया। मौके पर भाजपा के अनेक पदाधिकारी, समाजसेवी, व्यापारी एवं प्रबुद्धजनों सहित ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।

त्रिमूर्ति महाशिवजयंती पर अतिथियों ने कहा...

ब्रह्माकुमारीज़... सारे विश्व के लिए एक उदाहरण

जम्मू-248-ए.,बी.सी. रोड। त्रिमूर्ति महाशिवजयंती पर सेवाकेन्द्र पर आयोजित कार्यक्रम में फारुख खान,आई.पी.एस.,एडवाइज़र टू ऑनेबल एल.जी.,जे.एंड के. ने कहा कि आज के माहौल को देखते हुए मैंने ये बात समझी कि ब्रह्माकुमारीज़ का सहयोग सारे विश्व के लिए एक उदाहरण है। बहनों के द्वारा चलाई जा रही यह संस्था सत्य की पहचान देती है, ये जो कहते हैं वो करते भी हैं। यहाँ शांति का वातावरण देखकर ऐसा लगता है कि हम किसी अलग संसार में आ गये हैं। मेरी यही शुभ कामना है कि आपके द्वारा किया जा रहा कार्य और भी तीव्रगति से चले। इसमें हमारे द्वारा जो भी सहयोग हो सके, उसके लिए हम सदा तत्पर रहेंगे। राजयोगिनी ब्र.कु. सुदर्शन दीदी,क्षेत्रीय संचालिका ने कहा कि सत्य ही परमात्मा है, इसलिए कहा जाता है सत्यम् शिवम् सुंदरम्। शिवम अर्थात् कल्याणकारी। जहाँ सत्य है, कल्याणकारी कार्य है, कल्याणकारी सोच है, कल्याणकारी माहौल है, वही सुंदर है। निराकार त्रिमूर्ति शिव परमात्मा जिन्हें हम ईश्वर, अल्लाह, वाहेगुरू, गॉड आदि नामों से पुकारते हैं वही सत्य हैं। सत शर्मा,पूर्व मंत्री व भाजपा अध्यक्ष,जम्मू व कश्मीर ने कहा कि ऐसा सराहनीय कार्य जो यह संस्था कर रही है, अगर सभी यह कार्य करें तो हमारा भारत विश्व गुरू बन जायेगा। एडवोकेट अजय गंडोत्रा,अध्यक्ष,धर्मार्थ ट्रस्ट,जम्मू व कश्मीर ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ जो ज्ञान देती हैं वह हमारी शिक्षा में भी सम्मिलित होना चाहिए क्योंकि आज के समाज में मूल्यों का होना बहुत आवश्यक है। श्रीमति कमल सिसोदिया,कमाण्डेंट,सी.आर.पी.एफ. 76 बटालियन को ब्रह्माकुमारीज़ की ओर से सी.आर.पी.एफ. की सेवाओं एवं विभिन्न सहयोगी गतिविधियों के लिए प्रशंसा पत्र भेंट किया गया। तत्पश्चात् राजयोगिनी ब्र.कु. निर्मल दीदी ने राजयोग मेडिटेशन द्वारा मन की गहन शांति का सभी को अनुभव कराया। ब्र.कु. रूमाल भाई ने आभार व्यक्त किया तथा मंच संचालन ब्र.कु. रविन्दर भाई ने किया।

अंधकार मिटाकर प्रकाशमय विश्व बनाते 'शिव'

राँची-हरमू रोड(झारखण्ड)। सत्कर्म की सत्य शिक्षा तो केवल परमात्मा सदाशिव भगवान ही देते हैं। विकारग्रस्त विश्व के अज्ञान अधंकार को मिटाकर शिव ही प्रकाशमय बनाते हैं। उक्त उद्गार ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा महाशिवरात्रि महोत्सव पर आयोजित कार्यक्रम में राजकुमार सिन्हा,अतिरिक्त सचिव, पेयजल एवं स्वच्छता विभाग,झारखण्ड, राँची ने व्यक्त किये। गोपाल मोरारका, अध्यक्ष,श्रीश्याममित्र मंडल ने कहा कि ज्ञान सागर परमात्मा शिव से अमृत कलश प्राप्त करके अज्ञानता से ग्रस्त नर-नारियों को अमर पद दिलाने की ईश्वरीय सेवा करने के कारण भारत में शिव शक्तियों का गायन है। जो यहाँ प्रत्यक्ष देखने को मिल रहा है। शिवशंकर साबू,अध्यक्ष,श्री माहेश्वरी सभा ने कहा कि आत्म विस्मृति से पुनः आत्म स्मृति में मानवों को लाना ही शिव द्वारा उद्घोषित आध्यात्मिक क्रांति का लक्ष्य है व इसमें ही मानव की सर्व समस्याओं का समाधान है। सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. निर्मला दीदी ने कहा कि आज कलियुगी महारात्रि में आत्मा को परमात्म-ज्ञान द्वारा जागृत करना ही जागरण है और इस जागरण से ही सच्ची सामाजिक क्रांति आयेगी और कलियुगी विश्व व्यवस्था परिवर्तित होकर दैवी निर्विकारी वास्तविक स्वराज्य की स्थापना होगी। इस अवसर पर प्रवीण शर्मा,अध्यक्ष,राँची सी.ए. ब्रांच, डॉ. रीना सेनगुप्ता, नरेन्द्र लखोटिया, सचिव, माहेश्वरी सभा, सुजीत कुमार शर्मा, अध्यक्ष,चुटिया मंडल,बीजेपी, कौशल चौधरी,उपाध्यक्ष, चुटिया मंडल,बीजेपी, बिजयश्री साबू,अध्यक्षा, श्री माहेश्वरी सभा महिला मंडल आदि उपस्थित रहे। सभी ने मिलकर शिवध्वजारोहण किया।

द्वादश ज्योतिर्लिंग की झाँकी सभी के लिए दर्शनीय... - महन्त

रायपुर-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा महाशिवरात्रि पर विधान सभा रोड पर शान्ति सरोवर में आयोजित द्वादश ज्योतिर्लिंग झाँकी के उद्घाटन एवं अवलोकन पश्चात् विधानसभा अध्यक्ष चरण दास महन्त ने कहा कि द्वादश ज्योतिर्लिंग की झाँकी बहुत ही सुन्दर एवं रोचक होने के कारण सभी के लिए दर्शनीय है। यहाँ पर लगाई गई प्रदर्शनी से जीवन की अनेक समस्याओं का अध्यात्म के द्वारा समाधान करने की प्रेरणा मिलती है। शिक्षा मंत्री डॉ. प्रेमसाय सिंह टेकाम ने कार्यक्रम में शामिल होने की खुशी ज़ाहिर करते हुए कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्थान में दिया जाने वाला ज्ञान प्रेरणादायक और अनुकरणीय है। संसदीय सचिव श्रीमति रश्मि देवी सिंह ने कहा कि यहाँ शान्ति कुटीर में बैठने पर मन को असीम शान्ति का अनुभव हुआ। यहाँ पर आत्मिक शान्ति के साथ-साथ जीवन को जीने का रहस्य भी समझ में आया। बिलासपुर के विधायक शैलेष पाण्डे ने कहा कि मेडिटेशन करने से स्वास्थ्य अच्छा रहता है। जीवन निर्विकारी और सुखी बन जाता है। ब्रह्माकुमारीज़ की क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. कमला दीदी ने सभी को द्वादश ज्योतिर्लिंग झाँकी एवं प्रदर्शनी का अवलोकन कर इनसे प्रेरणा लेकर खुद को लाभान्वित करने का आह्वान किया।

महाशिवरात्रि पर... [[मंत्री सिद्धू के उद्गार]]

बिना भेदभाव मानवता की सेवा कर रही ये संस्था

मोहाली-पंजाब। शिव जयंती के अवसर पर सुख शांति भवन,फेज़ 7 में आयोजित कार्यक्रम में बलबीर सिंह सिद्धू,हेल्थ,फैमिली वेलफेयर एंड लेबर मिनिस्टर ने ब्रह्माकुमारीज़ की सराहना करते हुए कहा कि ये संस्था धर्म और जाति से ऊपर उठकर किसी भी भेदभाव के बिना मानवता की सेवा कर रही है। उन्होंने कहा कि कोई भी धर्म नफरत, ईर्ष्या व दुश्मनी नहीं सिखाता है। शिवरात्रि हम सभी का त्योहार है, क्योंकि ये किसी एक धर्म से जुड़ा हुआ नहीं, अपितु हर मनुष्य आत्मा और परमात्मा से जुड़ा हुआ है। राजयोगिनी ब्र.कु. प्रेमलता दीदी,संचालिका,मोहाली रोपड़ सर्कल ने कहा कि सभी को ध्यान की तकनीक सीखनी चाहिए क्योंकि ये सभी चुनौतियों और परिस्थितियों का सामना करने के लिए आंतरिक शक्ति को बढ़ाती है। उन्होंने कहा कि अशांति, आतंक, कष्ट और आत्महत्याएं केवल भौतिकवादी दृष्टिकोण का ही परिणाम है। राजयोगिनी ब्र.कु. रमा दीदी,संचालिका,रोपड़ ने महाशिवरात्रि पर शिव पर अक, धतूरा तथा बेलपत्र आदि अर्पित किये जाने वाले रस्मों पर प्रकाश डाला व जीवन में भौतिकता और आध्यात्मिकता के संतुलन की सलाह दी। कार्यक्रम में तीस पार्षद, डी.पी. गुप्ता,आई.ए.एस., आर.,पी.जी. आई., न्यूरो सर्जन डॉ. मंजुल त्रिपाठी, ए.के. सैनी,डिप्टी कलेक्टर,सतर्कता ब्यूरो आदि शरीक हुए तथा सभी को सम्मानित किया गया।

अबला नहीं... स्वर्ग का द्वार खोलने वाली है 'नारी'

रोपड़-पंजाब। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर सद्भावना भवन में 'विश्व परिवर्तन की धुरी-नारी' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में उपायुक्त सोनाली गिरी,आई.ए.एस. ने कहा कि महिलाओं को अपने अधिकारों के प्रति जागरुक रहना चाहिए। अभी तक भी महिलाओं के साथ हो रहे गलत व्यवहार के लिए दोषियों की बजाय महिलाओं को अपमानित किया जाता है। समाज में महिलाओं के प्रति इस सोच को बदलने की ज़रूरत है। साथ ही उन्होंने ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा की जा रही समाज सेवाओं की भूरी-भूरी प्रशंसा की। स्थानीय संचालिका ब्र.कु. रमा दीदी ने कहा कि आध्यात्मिकता से ही नारी का वास्तव में सशक्तिकरण होता है। नारी को अपनी मर्यादा में रह कर समाज उत्थान में सहयोग देना चाहिए। परमात्मा शिव द्वारा सिखाया जा रहा राजयोग मानव में दिव्य गुणों तथा आंतरिक शक्तियों का विकास करता है। बस इसे जीवन में अपनाने की ज़रूरत है। नारी अबला नहीं सबला है व स्वर्ग का द्वार खोलती है। बेला कॉलेज के प्रिन्सीपल सैलेश शर्मा ने कहा कि हमें महिलाओं के निर्णयों का सम्मान करना चाहिए और उन्हें सम्मान भी देना चाहिए। लुधियाना से गुरू गोविंद सिंह स्टडी सर्कल के यू.एन.ओ. मामलों के निर्देशक इंद्र पाल सिंह ने कहा कि हमारे गुरुओं व महापुरुषों ने भी माताओं-बहनों को बहुत ऊँचा दर्ज़ा दिया है। राजयोग प्रशिक्षिका ब्र.कु. अंजनी ने भी अपने विचार रखे। इस अवसर पर कमल शील कथूरिया, एडवोकेट डी.एस. डियोल, मौलवी अज़हर हसन, गुरूद्वारा सिंह सभा से स. कुलविंदर सिंह आदि गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

RNI NO RAJHIN/2000/00721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/21-23, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2021-23, Posting on 12th TO 14th and 22nd TO 24th each month, published on 3rd April, 2021
स्वामी - राजयोगा एजुकेशन एंड रिसर्च फाउंडेशन, प्रकाशक एवं सम्पादक - गंगाधर नरसिंघानी, मुद्रक - डी.बी. कॉर्प.लि. द्वारा भास्कर प्रिन्टिंग प्रेस, डी.बी. कॉर्प.लि.,शिवदासपुरा, टोंक रोड,जयपुर से मुद्रित एवं ओम शान्ति मीडिया, ब्रह्माकुमारीज़,शांतिवन-राज. से प्रकाशित।
कार्यालय - ओम शान्ति मीडिया, ब्रह्माकुमारीज़, शांतिवन, आबू रोड(राज.)- 307510
See Latest News - www.omshantimedia.org